Registered According to Act XXV of 1867.

रतनहजारा ।

रसनिधि कृत ।

जिसको

श्रीमन्महाराजाधिराज प्रमरबंशावतंस
छत्रपुराधिप श्रीमहाराजा साहब
श्रीराजाविश्वनाथसिंहजूदेव बहादुर
की आज्ञानुसार

श्री बाबू जगन्नाथप्रसाद कायस्थ श्रीवा-
स्तव हेड अकौण्टण्ट वा सरदफ्तर माल
राज छतरपूर (बुन्देलखण्ड)
ने

बड़े परिश्रम से टिप्पन वा शोध करके
तयार किया ।

इसका पूर्ण अधिकार बाबू रामकृष्ण
वर्म्मा को है ।

THE UNIVERSITY ... REGISTERED ... 15 MAY 1924

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुआ ।

सन् १८९२ ई० ।

भूमिका।

भः ।

हम को बहुत दिनों से इस बात की खोज थ। रसनिधि कवि कृत रतनहजारा का पता लगा कर छापा जाय। अनेक स्थानों में इसकी खोज की किन्तु कहीं भी पता न लगा। एक दिन साथही पन्ना और छत्रपुर दोनों जगहों से पत्र आये कि यह अपूर्व ग्रन्थ मिल गया है, तदुपरान्त श्रीयुत बाबू जगन्नाथ प्रसाद जी ने अत्यन्त परिश्रम कर इसे शोधा और यहां भेज दिया और सर्वसाधारण के समझने के लिये हमने भी अनेक स्थानों में टिप्पणी कर दी। रसनिधि जी का जीवनवृत्तान्त अभी तक हम लोगों को नहीं मिला है, मिलने पर वह भी प्रकाश किया जाय।

रामकृष्णवर्म्मा

६ अप्रेल १८९२

भारतजीवन सम

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ रतनहजारा प्रारम्भः ।

दोहा ।

लसत सरस सिन्धुरवदन (१) भालथली नखतेस (२) ।
बिघनहरन मंगलकरन गौरीतनय गनेस ॥ १ ॥
नमो प्रेमपरमारथी इह जाचत हौं तोहि ।
नन्दलाल के चरन कौं दे मिलाइ किन मोहि ॥ २ ॥
नमो प्रेम जिहि नै कियौ हिय लग आइ प्रकास ।
रँगरत वासी नाक कौं कान्ह गोपकन पास ॥ ३ ॥
निसिदिन गुंजत रहत जे विरद गरीबनिवाज ।
है निज मधुकर सुतन की कमलनैन तुहि लाज ॥४॥
वरन मधुर सुन्दर अरथ हरि सौं हित निरधार ।
रसनिधि सागर मथ लये दोहा रतन हजार ॥ ५ ॥

अथ भक्तभाव ।

अव तौ प्रभु तारैं बनै नातर होत कुतार ।
तुमहीं तारन तरन हौ सो मोरे आधार ॥ ६ ॥
सुबस वसत ते चित नगर जहां वसत हरि आइ ।
ऐसै तौ ऊजर परी तन की किती (३) सराइ ॥७॥

(१) हाथी । (२) चन्द्रमा । (३) कितनी हैं

बिरहघाम इन पै जुबै तन कौ सहौ न जाइ ।
चरनकमल नँदलाल के तब द्दग लागत जाइ ॥८॥
अद्भुत गति यह रसिकनिधि सरस प्रीत की बात ।
आवतही मन सांवरो उर कौ तिमिर नसात ॥९॥
बिवछि [१]भयौ मन लागि ज्यौं ललित तृभंगी संग ।
सूधौ होत न और तनि नउत रहै वह अंग ॥१०॥
कैइक स्वांग बनाइ के नाचौ बहुविधि नाच ।
रीझत नहि रिझवार वह बिना हिये के सांच ॥११॥
जाकौ गति चाहत दियौ लेत अगति तैं राखि ।
रसनिधि हैं या बात के भक्त भावगत साखि ॥१२॥
चित दै दियौ बिसार जनु बिरद गरीबनिवाजि ।
ब्रजवासिन के दरद कौं पहुँचत नहि ब्रजराज ॥१३॥
अम्बुज चरन पराग हर रही धरन ब्रज पूर ।
अजौं परसि तन करत वह बिरह बिथा को दूर ॥१४॥
धनि गोपी धन ग्वाल वे धनि जसुदा धनि नन्द ।
जिन के मन आगे चलैं धायौ परमानन्द ॥१५॥
आदि अन्त अरु मध्य मै जो है स्वयंप्रकास ।
ताके चरनन की धरैं रसनिधि मन मै आस ॥१६॥

अरुझ जाना ।

काल पखेरू तैं सही यों तनखेत उबेर ।
यह बिरियां ऐसे समय हरिया हरिया टेर * ॥ १७ ॥
यह प्रसिद्ध है रसिकनिधि मनमोहन की बात ।
पनिवारे(१)घट मैं बसै पनि घटि(२)ओर न जात ॥१८॥
भूले तैं कर तार (३) के रागु न आवै रासु ।
यही समुझ कै राख तू मन करतारैं(३)पास ॥ १९ ॥
हरि कौ सुमिरौ हरघरी हरि हरि ठौर जुबान ।
हर बिधि हरि के ह्वै रहौ रसनिधि संत सुजान ॥ २० ॥
मजनू लख लै ह्वै गये लै लै लैलै नाम ।
अचरज कह जौ कृष्ण कहि मिलै चरन अभिराम ॥२१॥
मनि समान जाके मनी नैकि न आवत पास ।
रसनिधि भावक करत है ताही मन मैं बास ॥२२॥
जिन काढ़ौ ब्रजनाथ जू मो करनी(४) कौ छोर ।
मो कर नीके (५) कर गहौ रसनिधि नंदकिसोर ॥२३॥
रसनिधि वाकौं कहत हैं याही तैं करतार ।
रहत निरन्तर जगत कौ वाही के कर तार ॥ २४ ॥

* खेतवाले पच्छियों को हांकने के लिये हरिया हरिया करके ललकारते हैं। (१) पनवारे अर्थात् पनवाले। (२) पनिघटि अर्थात् जिसमें प्रन न हो या कम हो। ओर = तरफ।
(३) करताल, परमेश्वर। (४) कर्म। (५) नीके कर = अच्छी तरह।

तेरी गति नँदलाडले कछू न जानी जाइ ।
रजहू तें छोटो जु मन तामे बासियत आइ ॥ २५ ॥
सब कुदरत तव कादरां मै करि रुजि सै दूर ।
रस खांकी तन कौ रवा आपु नूर सै पूर ॥ २६ ॥
सब सुख छाड़े नेहिया तुव सुख लेत उठाइ ।
सब सुख चाहत सबि रहै तुव सुख नही मिठाइ॥२७॥
मोहे नेकि न नैन जे मनमोहन के रूप ।
नीरस निपट निकाम ज्यौं बिन पानी के कूप ॥ २८ ॥
बेदव्यास सब खोजही नैक न पावति ताहि ।
मोहन मन दग करनि कर ब्रजबालनि लिय गाहि ॥
मन तूं मोहन सौं हमै काहे पारत बीच ।
पगो रहत है रैन दिन रे बिषयारस नीच ॥ ३० ॥
प्रेम्पति चरन सरोज पै जो अलि मन मडराइ ।
तेहि के दासन दास कौ रसनिधि संग सुहाइ ॥३१॥
जो चाहै तिहि चाहिये ज्यौं उर लैवौ हार ।
स्याम सनेहन के कछू रसनिधि मते अपार ॥ ३२ ॥
घरी बजी घरयार सुन बाजिकै कहत बजाइ ।
बहुर न पैहै यह घरी हरिचरनन चित ल्याइ ॥ ३३ ॥
हरि बिनि मन तुव कामना नैक न आवै काम ।
सपने के धन सौं भरे किहि लै अपनौ धाम ॥ ३४ ॥

जिन वारे (१) नँदलाल पै अपनै मन धन ल्याइ ।
उनके वारे (२) की कछू मोपै कही न जाइ ॥ ३५ ॥
हरिपूजा हरिभजन मैं सो ही ततपर होत ।
हरि उर जाही आइ कै हरबर करै उदोत ॥ ३६ ॥
रसनिधि मन मधकुर बसौ जो चरनाम्बुज माहि ।
सरस अनुखुलौ खुलत है खुलौ खुलौई नाहि ॥ ३७ ॥
रूप दृगन श्रवनन सुजस रसना मैं हरिनाम ।
रसनिधि मन मैं नित बसै चरनकमल अभिराम ॥ ३८ ॥
कपटौ (३) जबलौं कपट नहि साच बिगुरदा (४) धार ।
तबलौं कैसे मिलैगौ प्रभु साचौ रिझवार ॥ ३९ ॥
नेत नेत कहि निगम पुन जाहि सकै नहि जान ।
भयो मनोहर आइ ब्रज वही सो हरि हर आन ॥ ४० ॥
परम दया करि दास पै गुरुन करी जब गौर ।
रसनिधि मोहन भावतौ दरिसायौ सब ठौर ॥ ४१ ॥

ब्रह्मज्ञान बर्नन ।

पाप पुन्य अरु ज्योत तै रवि ससि न्यारे जान ।
यद्यपि सो सब घटन मैं प्रतबिम्बित है आन ॥ ४२ ॥
आपु भँवर आपुहि कमल आपुहि रंग सुबास ।
लेत आपुही बासना आपु लसत सब पास ॥ ४३ ॥

(१) निछावर किये (२) फायदा (३) काटौ (४) नाम हथयार ।

पवन तुहीं पानी तुहीं तुहीं धरनि आकास ।
तेज तुहीं पुन जीव है तुही लियौ तनबास ॥ ४४ ॥
बेखाये ते बेउफा बफा रहै ठहराइ ।
मीनै कीनै दूर ज्यौं तेही तै रह जाइ ॥४५॥
कहूं हाकमी करत है कहूं बन्दगी आइ ।
हाकिम बन्दा आपही दूजा नही दिखाइ ॥ ४६ ॥
सांची सी यह बात है सुनियौ सज्जन सन्त ।
स्वांगी तौ वह येक है वहके स्वांग अनन्त ॥ ४७ ॥
कोटि घटन मै बिदित ज्यौं रवि प्रतिबिम्ब दिखाइ ।
घट घट मै त्यौंहीं छिप्यौ स्वयप्रकासी आइ ॥४८॥
आसिक अरु महबूब बिच आप तमासा कीन ।
ह्यां ह्वै अलगरजी करै ह्वां ह्वै होइ अधीन ॥ ४९ ॥
लेत देत आपन रहै सिर अपनै नहि लेत ।
ह्वां ह्वै चित कौ लेत है ह्यांह्वै चित कौ देत ॥ ५० ॥
आप फूल आपुहि भँवर आप सुबास बसाइ ।
आपुहि रस आपुहि रसिक लेत आपु रस आइ ॥५१॥
ब्रह्म फटिक(१) मन सम लसै घट घट माँझ सुजान ।
निकट आय बरतै जो रंग सो रंग लगै दिखान ॥५२॥

(१) सुफेद हीरा ।

वही रंग वह आपुही भयौ तिली मै तेल ।
आपुन बासौ (१) सुमन है आपहि भयौ फुलेल ॥५३॥
यौं सब जीवन की लखौ ब्रह्म सनातन आद ।
ज्यौं माटी के घटन की माटी पै बुनियाद(२) ॥ ५४॥
जलहू मे पुन आप ही थलहू मे पुनि आप ।
सब जीवन मै आपु है लसत निरालौ(३)आप ॥५५॥
अमल दिवैया आपुही अमल लिवैया आप ।
अमल माझ जो अनिल वह रसनिधि सोई आप ॥५६॥
मोहनवारौ(४)आपुही मन मानिक पुनि आप ।
पोहनवारौ आपुही जोहनिहारौ आप ॥ ५७ ॥
बंसीहू मै आपही सप्त सुरन मै आप ।
बजवैया पुनि आपही रिझवैया पुनि आप ॥५८॥
बीज आपु जर आपुही डार पात पुनि आपु ।
फूलहि मै पुनि आपु फल रस मै पुनि निधि आपु॥५९॥
पञ्चन पञ्च मिलाइ(५) कै जीव ब्रह्म मै लीन ।
जीवनमुक्त कहावही रसनिधि वह परवीन ॥६०॥

(१) सुगन्धित हुआ। (२) यह शब्द फारसी का है अर्थ जड़।
(३) अलग। (४) मोहित होने वाला।
(५) पञ्चतत्व शरीर को पंचतत्व में मिलायकर अर्थात् मृत्यु होने पर। पंचतत्व के नाम १ पृथ्वी, २ जल, ३ अग्नि, ४ वायु, ५ आकाश।

आसिक हू पुनि आपु तौं महबूबा पुनि आप ।
चाहनहारौ आप त्यौं बेपरवाही आप ॥ ६१ ॥
कुदरत बाकी भर रही रसनिधि सबही जाग(१) ।
ईंधन बिन बनियौ रहे ज्यौं पाहन(२)मै आग ॥ ६२ ॥
अलख सबैई लखत वह लख्यौ न काहू जाइ ।
दृग तारनि के तिलक की झांकि न झांखित जाइ ॥६३॥
तिलन मांझ पुनि आप त्यौं सुमन मांझ पुनि आपु ।
बासनवारौ आप त्यौं पेरनवारौ आपु ॥ ६४॥
गरजन मै पुनि आपही बरसन मै पुनि आप ।
सुरझन मै पुनि आपु ज्यौं [illegible] तार ।
कहूँ तमासा देखही आप बैठि रिझवार ॥ ६६ ॥
नर पसु कीट पतंग मै थावर जङ्गम मेल ।
ओट लियै खेलत रहै नयौ खिलारी खेल॥ ६७ ॥
आपुहि वा महबूब मै बेदरदी सरसाइ ।
आपुहि आसिक मै इहां दरद अँगेजत आइ ॥ ६८॥
हिन्दू मै क्या और है मुसलमान मै और ।
साहिब सब का एक है व्याप रहा सब ठौर ॥ ६९ ॥

---

(१) जगह । (२) पत्थर ।

कहुं नाचत गावत कहूं कहूं बजावत बीन ।
सब मै राजत आपुही सबही कलाप्रबीन ॥ ७० ॥
जल समान माया लहर रवि समान प्रभु एक ।
लहि वाके प्रतिबिंब कौं नाचत भाँति अनेक ॥ ७१ ॥
राई कौ बीसौ हिसा ताहू मै पुनि आइ ।
प्रभु बिन खाली ठौर कहुं इतनौहूं न दिखाइ ॥७२ ॥
अलख जात इन दृगनि सौ बिदत न देखी जाइ ।
प्रेम कांति वाकी प्रगट सबही ठौर दिखाइ ॥ ७३ ॥
जदपि रह्यो है भावतौ सकल जगत भरपूर ।
बल जैये वा ठौर की जहँ ह्वै करै जहूर ॥
दीपक आपुहि था लिखौ आपुहि हुआ पतंग ।
आपुहि आसिक होइ के आपुहि डाटत अङ्ग ॥७४॥
कौन रीझवाये सकै को बस करै रिझाइ ।
आपु रिझावन हो रह्यो आपहि रीझत आइ ॥७५॥
पंचतत्व की देह मै त्यों सुर व्यापक होइ ।
विस्वरूप मे ब्रह्म ज्यों व्यापक जानौ सोइ ॥७६॥
रसही मे औ रसिक मै आपहि कियौ उदोत ।
स्वाति बूंद मे आपही आपहि चात्रिक होत ॥७७॥
घट भीतर जो बसत है दृगनस वा की जोत ।
देखत सब पै सबन मै बिरल न जाहिर होत ॥७८॥

अलख सबै जापै कहै लखौ कौन बिधि जाइ ।
पाक जात की रसिक निध जगत सिफात दिखाइ ॥७९॥
करत फिरत मनबावरे आप नहीं पहिचान ।
तोही मै परमातमा लेत नहीं पहिचान ॥ ८० ॥

सोरठा ।

सो दीसै सब ठौर व्याप रहौ मन माह जो ।
सज्जन करि कै गौर वाही कौं निज जानियै ॥८१॥

दोहा ।

वैठा है इस दलक बिच आपै आप छिपाइ ।
साहब जा तन लख परै प्रगट सिफात दिखाइ ॥

अथ सज्जनवर्णन ।

तूं सज्जन या बात कौं समुझ देख मन माह ।
अरे दया मै जो मजा सो जुलमन मै नाह ॥८३॥
सज्जन हो या बात को करि देखौ जिय गौर ।
बोलन चितवन चलन वह दरदवंत को और ॥८४॥
इत जमना रमना उतै बीच जहानाबाद ।
तामै बस नेकी करौ करौ न बाद बिबाद ॥ ८५ ॥
मींता तूं या बात कौं हिये गौर करि हेर ।
दरदवन्त बेदरद कौं निसिबासर कौ फेर ॥ ८६ ॥
कठिन दुहू बिधि दीप कौ सुन हो मीत सुजान ।
सब निसि बिन देखै जरै मरै लखै मुख भान ॥८७॥

सीख सुधाई तीर तैं तज गति कुटिल कमान ।
भावे चिल्ला बैठ तूं भावै बिच मैदान ॥ ८८ ॥

सोरठा ।

न जरै सहित सनेह, करै प्रकासित जगत जे ।
नजरै अचरज येह, बिन सनेह दुरजन करै ॥ ८९ ॥

दोहा ।

हित मत जौ जानौ चहौ सीखौ याके पास ।
बटै कुटै न तजै तऊ केसर रंग सुबास ॥ ९० ॥

सोरठा ।

कमल कुलीनन बात सुनौ सनेही श्रवन दै ।
जीवन (१) जारत जात तऊ न रबि सौं हित तजै ॥ ९१ ॥

दोहा ।

बिन आदर जौं रूप नृप छबि मुकताहल देत ।
दृग जाचक ये दीठ कर बिन सनमान न लेत ॥ ९२ ॥
आये इसक लपेट मै लागी चसम चपेट ।
सोई आया जगत मै और भरै सब पेट ॥ ९३ ॥
सज्जन पास न कहु अरे ये अनसमझी बात ।
मोम रदन (२) कहुँ लोह के चना चबाये जात ॥ ९४ ॥
जब देखौ तब भलन तैं सजन भलाई होहि ।
जारै जारै अगर ज्यौं तजत नही खसबोहि ॥ ९५ ॥

(१) जीवन = जल, वा जीव । (२) दांत ।

बेदाना सै होत है दाना येक किनार ।
बेदाना नाहि आदरै दाना येक अनार ॥ ९६ ॥
प्रीतम इतनी बात कौ हिय कर देखु विचार ।
बिन गुन होत सु नैकहूं सुमन हिये कौ हार ॥ ९७ ॥
हित करियत यह भांति सौ मिलियत है वह भांत ।
छीर नीर तैं पूछ लै हित करिबे की बात ॥ ९८ ॥
बढ़त आपनो गोत कौ और सबै अनखाइ
सुहृद नैन नैना बड़े देखत हियौ सिहाइ ॥ ९९ ॥
पसु पच्छीहू जानही अपनी अपनी पीर ।
तब सुजान जानौं तुमै जब जानौ परपीर ॥ १०० ॥
बड़े यार श्रीकन्त के भेदहि कहियतु नाहिं ।
अरे यार के यार कौ सोच होत जिय माहिं ॥ १०१ ॥
इतनौई कहनो हतौ प्रीतम तोसौं मोहि ।
मान राखबी बात तौ मान (१) राखनौ तोहि ॥ १०२ ॥
गये जादिय मुनि सूर तन पत्थर घनै चलाइ ।
व्यापे तन जे फूल वे महरम घाले आइ ॥ १०३ ॥

मदनबर्नन ।

मदन गवन जब करत है जाही तन मै आइ ।
छबि वाकी सब तैं सरस नैनन वही दिखाइ ॥ १०४ ॥

(१) सनमान ।

नेह मौन (१) छबि मधुरता मैदा रूप मिलाय ।
बेंचत हलुवाई मदन हलुआ सरस बनाय ॥ १०५ ॥
मदन भूप राजै जहां सहसा सकौ न जाइ ।
रूप चांदनी मै धरौ पौछ पलन (२) दृग पाइ ॥ १०६ ॥
अरे जरे की पीर कौ तू तौ जानत है न ।
नेहनि जारत फिरत तूं जानबूझ कै मैन ॥ १०७ ॥
बिनहूं बाग लगाम वह चाबुक लेत न हाथ ।
फेरत बाहक (३) मैन लख नैन हरिन (४) इक साथ ॥ १०८ ॥
अबलख (५) नैन तुरंग ये पलकैं पाषर (६) डार ।
आयौ मदन सवार ह्वै अब को सकै सम्हार ॥ १०९ ॥
सारी डाली हरति अति लोचन मुंडाडार ।
अलिकावलि बागुर रची खेलत मदन सिकार ॥ ११० ॥
कहन सुनन चितवन चलन बिहँसन सहज सुभाइ ।
सब अंगन कौ देत है आइ अनंग सिखाइ ॥ १११ ॥
कीन्हे बिदित सु मार नै नेही जिते सुमार ।
आवत नही सुमार मे ते वे किये सुमार ॥ ११२ ॥
बालबदन को मदन नृप रूप इजाफा दीन ।
नैन गजन पर भौंह जनु मीनकेत धर लीन ॥ ११३ ॥

---

(१) घी । (२) पलक । (३) सवार । (४) घोड़ा ।
(५) अबलक = एक किस्म का घोड़ा । (६) बखतर ।

आवत आमिल काम, तन बाढ़त जोबन जोर ।
जिमीदार कुच उकसि कै सोभा देत अकोर(१)॥११४॥
विधये (२) मैन खिलार नै रूपजाल दृग मीन ।
रहत सदाई जे भये चपल गतन रसलीन ॥११५॥
लखौ मैन तै मैन मै यह अद्‌भुत गत आइ ।
वह पिघलत लगि आपि कै यह लगि मन पिघलाइ॥११६॥
बदन सरोबर तै भरे सरस रूपरस मैन ।
डीठ डोर सौ बांधिकै डोलत सुन्दर नैन ॥ ११७॥
चित चाहन सरसाइ रस रहै समारत रोज ।
मनमथ राज सु आइ कै किय उर मढ़ी उरोज॥११८॥
करत न जब तक मदन नृप रूप सनद पर छाप ।
तब तक दृग दीवान ढिग होत न वाकी थाप॥११९॥
छबि तावन यह तिल सिला रूप सजल लख नैन ।
कलपै दै हित कलप पै मन पट धोबी मैन ॥१२०॥
जब तै दीन्हौ है इन्है मैन महीपति मान ।
चित चुगली लागे करन नैना लगि लगि कान॥१२१॥
सिद्ध कला जब तै इन्है लला पढ़ाई मैन ।
सुरजन मन बस करत हैं तब तै तेरे नैन ॥१२२॥

(१) नज़र घुस पुराने कवियों ने घुस के अर्थ में अर्थात् रिसवत के अर्थ में अकोर को लिखा है। (२) फँसाया ।

नेही दृग दीवान ने जबतै कीनी थाप ।
रूप सनद पै कर दई मदन भूप तिल छाप॥ १२३॥
नेह नगर मै कहि फिरै मैन लाग मनि कान ।
रुजू होव नदलाल सै चित बित(१) ल्याइ सुजान॥१२४॥
कोमल किसलय दलनि सै जे तिय है अभिराम ।
दहत सतन कौ आइ कै देख अतन के काम॥१२५॥
रूप नगर बस मदन नृप दृग जासूस लगाइ ।
नेहिनि मन कौ भेद उन लीनौ तुरत मगाइ॥१२६॥
रूप तख्त पै आइ कै बैठौ मदन सुभूप ।
नेही दृग मन नजर लै राजत द्वार अनूप ॥१२७॥
बदन बहल कुण्डल चका भौंह जुवा हय नैन ।
फेरत चित मैदान मै बहलवान बर मैन ॥ १२८ ॥

अथ जोबन बर्नन ॥

औसर कौ मौसर (२) भये मत दै कर तै खोइ ।
जोबन औसर भावतो बार बार नहि होइ॥ १२९॥
जोबन ये वन ये वनौ सिरी चढ़ी लखि जाहि ।
रूप नगर मै आइ कै छविधन (३) लीन्ही ब्याहि॥१३०॥

(१) धन। (२) यह शब्द फांसी का है असल शब्द मवक्षर है जिसके माने मिलने के हैं। (३) स्त्री।

जोबन आमिल आइ, कै भूसन कर ततबीर ।
घट बढ़ रकम बनाइ कै सिसुता करी तगीर(१) ॥१३१॥

रूप वर्णन ।

नागर सागर रूप कौ जोबन तरल तरंग ।
सकत न तर छबि भँवर पर मन बूड़त सब अंग ॥१३२॥
अजब सांवलौ रूप लखि दृगन उरौंई जाइ ।
जिहि उर तन मो उर तिमिर तुरत दुरौंई जाइ ॥ १३३ ॥
रूप समुद छबि रस भरौ अतिही सरस सुजान ।
तामै तै भर लेत दृग अपनै घट उनमान ॥१३४॥
अरे मीत या बात कौ देख हिये कर गौर ।
रूप दुपहरी छांह कब ठहरानी इक ठौर ॥ १३५ ॥
रूप बाग मे रहत है बागवान तुव नैन ।
मन धन लै छबि अमृत फल दैन कहत पै दैन(२) ॥१३६॥
आंखिन के जब पल अधर हेरत चिबुके जात ।
मधुर रूप सोहै भरौ हिय तक जाकौ गात ॥१३७॥
लाल भाल पै लसत है सुंदर बिंदी लाल ।
कियौ तिलक अनुराग ज्यौं लख कै रूप रसाल ॥ १३८॥
उर दियला (३) राख्यौ जु मै सरस सनेह (४) भराइ ।
बेग भावते कीजियै रूप रोसनी आइ ॥ १४० ॥

(१) असक शब्द तगैय्युर अर्थ तबदीली माने बदली । (२) अर्थ छबि रूपी अमृत फल देने कहत है परन्तु देता नहीं । (३) अर्थ दिया । (४) अर्थ स्नेह वा तेल ।

रूपसिंधु मै जाइ कै जब तैं परस्यौ नेह * ।
तब तैं कैयौ रंग सौं रूप दिखाई देह ॥ १४१ ॥
प्रीतम रूप कजाक [१] के समसरं कोई नाहि ।
छबि फाँसी दै दृग गरे मन धन कौं लै जाहि ॥ १४२ ॥
बिधि नै जग मै तैं [२] रच्यौ अैसी भांति अनूप ।
आभूषन कौ है लला आभूषन तुव रूप ॥ १४३ ॥
मन कन पलटै मिलत है जिन्है रूप धन माल ।
तिनही के बिधि नै रचे जग मै भाल बिसाल ॥ १४४ ॥
रूप चांदनी की गढ़ी स्वच्छ राखिवे हेत ।
दृग फरास हाजिर खड़े बरुनि बहारू देत ॥ १४५ ॥
तौ कैसै तन पालते नेही नैन मराल [३] ।
जौ न पावते रूपसर छबि मुक्ताहल [४] लाल ॥ १४६ ॥
रूप दीप जेतौ धरौ मन फानूस दुराइ ।
तऊ जोत वाकी दृगन होत प्रकासित आइ ॥ १४७ ॥
सुन्दर जोवन रूप जो बसुधा मैं न समाइ ।
दृग तारन तिल बिच तिन्है नेही धरत लुकाइ ॥ १४८ ॥
छके रूप मदपान कै ठहरत नाहिं पल [५] पाइ [६] ।
लटपटाइ दृग दीठ कर गहति प्रीत पट धाइ ॥ १४९ ॥

---

* जल में नेह अर्थात् तेल पड़ने से अनेक प्रकार के रंग दिखाई देते हैं।
(१) फारसी कज्जाक अर्थ क़ज़ाद । (२) तुझको । (३) हंस ।
(४) मोती । (५) पलक । (६) पैर ।

बेपरवाही बांध बँध (१) राख्यौ मन अटकाइ ।
नतर कुरूप प्रवाह उहि देतौ कितै बहाइ ॥ १५० ॥
बहुत निकाइन तै लख्यौ तेरौ रूप निकाइ ।
नव अनुरागी दृग रहे तेरे हात बिकाइ ॥ १५१ ॥
मलयागिर चन्दन सरस घिसि घिसि ल्यावत कूर ।
जात तपन कहुँ दृगन की बिन वा रूप कपूर (२)॥ १५२ ॥
ज्यौं उत रूप अपार है त्यौं इत चाह अपार ।
नैन बिचौंही दुहुन कौं पाइ सकैं नहि पार ॥ १५३ ॥
रूप निकाई मीत की ह्यां तक लौं अधिकात ।
जा तन हेरौ निमिख कै रीझहि रीझी जात ॥ १५४ ॥

सोरठा ।

जोती डोरे लाल, पलकन के सजि कै पला ।
तारे बाट बिसाल, जोखत दृग हरिरूप धन ॥ १५५ ॥

दोहा ।

और सवादन(३) पै लखौ भूलहु चित्त न देइ ।
अँखियां मोहनरूप कौं बिन रसना रस लेइ ॥ १५६ ॥

(१) पर वाह का अर्थ बहना । (२) वैद्यक मे कपूर नैनों के शीतल करने को विशेष औषधि है । (३) सवाद का बहुवचन सवादन ।

छबि कन दै दृग जाचकन जे नहि पालत आन ।
रूपरासि उनकौ दई दई कहा धौं जान ॥ १५७ ॥
पलक (१) पुरौ नहि होइ दृग निसि नारी के साथ ।
रूप कूप तैं कौन बिधि रस लागत है हाथ ॥१५८॥
निज करनी लखि आपनी रहियत है अरगाइ (२) ।
काचे घट चहियत भरौ नव सरूप रस ल्याइ ॥१५९॥
दृगरसना जानत सही मधुर रूप रस हौन ।
सक्कर मय पावत सुनी कहू हाटकी गौन ॥ १६० ॥
रूप कहर दरियाव मे तरिबौ है न सलाह ।
नैनन समुझावत रहै निसि दिन ज्ञान मलाह ॥१६१॥
जो भावै सो कर लला इन्है बांध वा छोर ।
हैं तुव सुबरन (३) रूप के ये मेरे दृग चोर॥ १६२ ॥
तुव बन (४) मे खोयौ गयौ मन मानिक ब्रजराज ।
लगे संगही फिरत हैं नैना पावन काज ॥ १६३ ॥
मदन जुवा के खेल मै रूप सई कौ देत ।
दुवा (५) और कौ मेट कै लाल तियाही लेत ॥१६४॥
रूप नगर मै बसत है नगरसेठ तुव नैन ।
मन जामिन लै नेहियन लगे पुँजी छबि दैन ॥१६५॥

---

(१) जब पलक रूपी पुर्वट नीचे नहीं झुकता तो रूप रूपी कूप से कैसे रस निकसै,
(२) अलगाय अर्थात् चुप। (३) सोना और उत्तम वर्ण।
(४) पानिप और जंगल। (५) दुकी और दावा, दुया = दूसरे का अधिकार।

ओर वार दृग जे परे तेरे रूप अहोर ।
मन मलाह अब सकत नहि यातें इन्हें बहोर ॥१६६॥
बरुनी जोती पल पला डांडी भौंह अनूप ।
मन पसंग तौलै सुदृग हरुवौ गरुवौ रूप ॥ १६७॥
मुकत स्वेदकन चिबुक लख लखी न अलि कै जाल ।
बदन रूप रस मै फस्यौ रसनिधि सुमन मराल ॥१६८॥
जौ नहि करतौ भावतौ रूप भूप प्रतिपाल ।
तौ इन लोभी दृगन कौ होतौ कौन हवाल ॥१६९॥
भले छकाये नैन ये रूप सबी (१) के कैफ ।
देत न मृदु मुसक्यान की गजकि आइ बेहैफ ॥ १७० ॥
सरस रूप कौ भार पल सहि न सकैं सुकुमार ।
याही तें ये पलक जनु झुकि आवें हर बार ॥ १७१ ॥
कर दीन्ही तुव रूप नै दृगन सु छबि तनखाह ।
दियौ चाहिये भावते इन कौ ख्वाहमख्वाहि ॥ १७२ ॥
कीनौ जतन सुजान बहु अजौं न निकसे तेव ।
परौ सुमन नँदलाल की रूप जेब की जेव ॥ १७३ ॥

सोरठा।

कावर (२) सुन्दर रूप, छबि गेहुँवा (३) जहँ ऊपजै ।
बाला (४) लगै अनूप, हेरत नैनन लहलही ॥ १७४ ॥

(१) मदिरा शायद आसव का अपभ्रंश है। (२) किसम जमीन और कैसा सुन्दर। (३) गेहूं और रंग। (४) बाल और स्त्री।

दोहा।

छबि सहचरि सौं दृगन कौं इन व्यभिचार लगाइ ।
रूप भूप तुव लगनि कर मन धन लियौ लुटाइ ॥१७५॥
पल पिंजरन मै दृग सुवा जदपि मरत है प्यास ।
तदपि तलफ जिय राखही रूप दरस रस आस ॥१७६॥
रूप भूप कौ हुकुम यह इतनी किन कहि देव ।
बिना सनेही दृग हियौ आवन इहां न देव ॥१७७॥
यारि फेर कै आप पै जरति न मोरे अंग ।
रूप रोसनी पै झपै नेही नैन पतंग ? ॥१७८॥
खोर (१) खोर सब देत है मेरे नैनन खोर ।
लाल मनोहर रूप को देत न कोऊ खोर* ॥१७९॥
बिरह पीर कौ नैन ये सकैं नहीं पल कांध ।
मीत आइ कै तूं इन्हैं रूप पीठ दे बांध ॥ १८० ॥
रूप ठगौरी डार मन मोहन लैगो साथ ।
तब तैं सासैं भरत है नारी नारी हाथ ॥ १८१ ॥
रूप किरकिटी पर गई जब तैं दृगन मँझार ।
लाल भये तब तैं रहत बरषत अँसुवन धार ॥१८२॥
लाल रूप के अम्रतफल दृगद्रुम लागत आइ ।
याही तैं बिधि नै दई बरुनी बारि (२) बनाइ ॥ १८३ ॥

(१) गलीगली। * दोष। (२) बारी।

जा दुकान कौ रूप मद अमली दृगन रेहाइ।
जिय गहनै धर पियत है बार बार ह्वां जाइ॥१८४॥
उर तम मै आवत डरौ जो तुम नंदकुमार।
चित सुरोसनी रूप तुव लियैं खड़े दृग द्वार॥१८५॥
कबहुँ न ये आवत इहां कुहू निसा लखि लेत।
झप झाँकति चहुँवोर तैं कहु चकोर केहि हेत॥१८६॥
रूप स्वाद कौ दृगनि सम जौ पल (१) लेते जान।
मीत लखत होते नहीं ये बिच आगे आन॥१८७॥
जुलुफ निसैनी पै चढ़े दृग धर पलकैं पाइ।
रूप महल छबि रोसनी तब देखैं हे आइ॥१८८॥
माफी की तौ कर दई सनद दृगन कर हेत।
रूप जिनस पल गोन मे काहे भरन न देत॥१८९॥
चढ़ी मदन दरगाह मै तेरे नाम कमान।
तख़त मुबारक रूप कौ तुझै मीत सुलतान॥१९०॥
प्रीतम पै चाख्यौ दृगन रूप सलौनै लौन (२)।
कटैं इश्क मैदान मै तौ कहु अचरज कौन॥१९१॥
अरे बैद चाहिये दवा सो नहिं तेरे पास।
नैन जखम तिनि रूप रस आवत है गौरास॥१९२॥

(१) पलक। (२) निमक खानेवाले मुंह नहीं मोड़ते।

नित हित सौं पालत रहै रूप भूप नँदलाल ।
छवि पनिवारन मै मनौ दृग पर वारन हाल ॥१९३॥

मुख बर्णन।

मीत सुमुख की जोत तौ नेहै राखत पोषि ।
दीपजोत तौ लेत है सिर सौं नेहै सोष ॥१९४॥
सकै सताइ न पल इन्है बिरहा अनिल सुछंद ।
न जरै जे नजरै (१) रहै प्रीतम तुव मुखचंद ॥१९५॥
जब जब वह ससि देत है अपनी कला गँवाइ ।
तब तब तुव मुखचंद पै कला माँगि लै जाइ ॥१९६॥
कुहू निसा तिथिपत्र मै बाचन कौ रह जाइ ।
तुव मुख ससि की चाँदनी उदै करत है आइ ॥१९७॥
वह ससि निसि मै देखिये तारन माह सुछंद ।
निसिदिन दृगतारानि (२) लसै तुव मुखतारन चंद (३) ॥
दृग मृग नेहनि के कहूं फांद न पावहि जान ।
जुलफ फँदा मुख भूमि पै रोपे बधिक सुजान ॥१९९॥
सुमन सहित आँसू उदक (४) पल अँजुरिन भरि लेत ।
नैन ब्रती तुव चंदमुख देखि अरघ कौं देत ॥२००॥

---

(१) देखता रहै। (२) आंखोंकी तरैया मे।
(३) चंद्रमा का तारनेवाला मुख। (४) जल।

छबि धन पैयत अमित जहँ लख मुखचंद उदोत ।
मन नग मोहन मीत पै बारे बारौ होत ॥ २०१ ॥
भावन्ता मुख स्वच्छ पै जो यह तिल दरसाइ ।
मो दृग तारन मै जु तिल ताकी आभा आइ ॥२०२॥
मदन कहन जबसौं लगे तब तैं चतुर विचार ।
हरौ गयौ याकौ सुमद मोहनबदन निहार ॥ २०३ ॥
हीरा भुज ताबीज मै सोहत है यह बान ।
चंद लखन मुख मीत जनु लग्यौ भुजा सन आन ॥२०४॥
जब लग हिय दरपन रहै कपट मोरचा छाइ ।
तब लग सुंदर मीत मुख कैसे दृगन दिखाइ ॥२०५॥
जातैं ससि तुव मुख लखै मेरौ चित्त सिहाइ ।
भावंता उनिहार कछु तोमे पैयत आइ ॥ २०६ ॥

पूर्वानुराग ।

नंद महर के बगर तन अब मेरै को जाइ ।
नाहक कहुँ गड़ि जाइगौ हित काँटौ मन पाइ॥२०७॥

तिल वर्णन ।

नेही तिल रसनिधि लखौ सुमन (१) संग पिरि जाइ ।
निरमोही मुख के जु तिल (२)सुमन पेरि बच जाइ॥२०८॥
तिल न होइ मुख मीत पर जानौ वाकौ हेत ।
रूप खजानै की मनौ हबसी चौकी देत ॥ २०९ ॥

(१) फूल । (२) सुंदर मन ।

मुरली बरनन ।

मोहन बसुरी (१) लेत है बाजि कै बसुरी (२) जीत ।
बसुरी(३)यासौं चलत नहि बस कर करत अनीत ॥२१०॥
कानन लग कै तैं हमैं कानन (४) दियौ बसाइ ।
सुचिती ह्वै तैं बासुरी बस अब वृज मै आइ ॥ २११ ॥
ऐसे जौ नित बासुरी वह बजाइहै आन ।
तौ कैसे रहि सकैगी या वृज मै कुलकान ॥ २१२ ॥
मत बजाय इत आइ कै मोहन मुरलीतान ।
हरि लैहै काहू मनै नाहक लगिहै कान ॥ २१३ ॥
मोहन बसुरी सौं कछू मेरौ बस न बसाइ ।
सुर रसरी सौं श्रवन मगु बांधि मनै लै जाइ ॥२१४॥
सुनियत मीनानि मुख लगै बंसी अबै सुजान ।
तेरी ये बंसी लगै मीनकेत (५) कौ बान ॥ २१५ ॥
अब लग बेधत मन हते दृग अनियारे बान ।
अब बंसी बेधनि लगी सप्त सुरन सौं प्रान ॥ २१६ ॥
बिछुरत सुन्दर अधर तै रहत न जिहि घट सांस ।
मुरली सम पाई न हम प्रेम प्रीत को आंस॥ २१७ ॥
तोहि बजै बिख जाइ चढ़ि आइ जात मन मैर ।

(१) बांसुरी । (२) संसार । (३) काबू जोर ।
(४) बन । (५) कामदेव ।

बंसी तेरी बैर कौ घर घर सुनियत घैर (१) ॥२१८॥
करत त्रिभंगी मोहनहि मुरली लग अधरान ।
क्यों न तजैं ताके सुनै और सबै कुल कान ॥ २१९॥

नैन वर्णन ।

मैन चैंपु हित सांट की डीठ लगाइ उगै न ।
धरत अहेरी मन हियै तेरे खंजन नैन ॥ २२० ॥
रूप नगर दृग जोंगिया फिरत सु फेरी देत ।
छबि मन पावत है जहां पल झोरी भरि लेत ॥२२१॥
तुव अनियारे दृगन कौ सुनियत जग मै सोर ।
अजमावत का फिरत हों कमजोरन सौं जोर ॥२२२॥
नजरैई सब रहत हैं येक नजरिया वोर ।
उतनेही मे चोरही (२) चित बित तुव दृग चोर ॥२२३॥
रसनिध सुन्दर मीत के रंग चुचौंहैं नैन ।
मन पट कौं कर देत हैं तुरत सुरंग ये नैन ॥२२४ ॥
कजरारे दृग की घटा जब उनवै जिहि ओर ।
बरसि सिरावै (३) पहुम (४) उर रूप झलान झकोर ॥२२५॥
कैसै मन धन लूटते भावन्ता के नैन ।
मनमथ जौ देते नहीं इन कर (५) बरछी सैन ॥ २२६ ॥

(१) गिला वा शिकायत । (२) चुरा लेते हैं ।
(३) ठंढाकरते हैं । (४) पृथ्वी । (५) हाथ ।

मतवारे दृग गज कहूँ ऐसे दीजत छोड़ ।
नेही दृग तन क्यौं सकैं इन की झोकैं ओड़ ॥ २२७ ॥
मैन महावत दृग गजन हुलसत वाही ओर ।
लाखन मैं लखि लेत है हियही कौ चित चोर ॥ २२८ ॥
मन धन तौ राख्यौ हतौ मै दीबे कौ तोहि ।
नैन कजाकन पै अरे क्यौं लुटवायो मोहि ॥ २२९ ॥
प्रेम नगर दृग जोगिया निस दिन फेरी देत ।
दरस भीख नँदलाल पै पल झोरिन भरि लेत ॥ २३० ॥
दरस दान तोपै चहै दृग पल अँजुरी वोड़[1] ।
पूरन कर मनकामना इनै बिमुख मत छोड़ ॥ २३१ ॥
तब जानैं सासि और पै तोये लेव चलाय ।
दृग चकोर तौ रावरी खासी रैयत आय ॥ २३२ ॥
जो नहि देतौ अतन[2] कहुँ दृगन हरवली[3] आय ।
मन ममास[4] जे सुतिन के को सर करतौ जाय ॥ २३३ ॥
देतौ जो नाहिं भेद कहुं नैनन सौं मिल नैन ।
मीत उजागर आवतौ कैसै मन धन लैन ॥ २३४ ॥

---

(१) फैलाकर । (२) कामदेव । (३) फौज की अफसरी । हरावल सेना के उस हिस्से को कहते हैं जो मुख्य फौज के आगे रहता है, शायद उसीका अपभ्रंश अंगरेजी मे Herald है ।

(४) वासस्थान, यहां कामदेव के मन्मथ नाम पर आक्षेप है, मन को दृगन के द्वारा मथा उसीलिये अतन मन्मथ कहलाया ।

छूटे दृग गज मीत के बिच यह प्रेम बजार ।
दीजौ नैन दुकान के महुकम (१) पलक किवार ॥ २३५ ॥
जिहि लालच मन धन दियौ दृगन मीत तुहि ल्याइ।
काहे ते वह रूपरस देत न इनकों प्याइ ॥ २३६ ॥
मोहन छबि दरियाव मैं जाइ सकै नहिं पार ।
झझकि रहत हैं देख कै पैरवार (२) दृगवार ॥ २३७॥
प्रथम सुमिर तुव दृगन कौं जे प्रनाम करि लेत ।
मीता उनकौं जगत मैं जादा आदर देत ॥ २३८ ॥
नातवान (३) तन पै सुनौ येती ताकत है न ।
मत झुकाव मों सामुहें गज मतवारे नैन ॥ २३९ ॥
मीत नीत (४) की चाल ये चल जानतहू है न ।
छबि सैना सजि धावहीं अबलन पै तुव नैन॥ २४० ॥
ऐसो तौ कीन्हो हतो कछु गुनाह भी मैं न ।
मो तन पै झुझकावही गज मतवारे नैन ॥ २४१ ॥
जब तै नागर मन बसौ आइ सु मैना मैन ।
पहिराये करकै निसा चित चोरी को नैन ॥ २४२ ॥

---

(१) मजबूत। (२) पैरनेवाला। (३) कमजोर।

(४) मीत के नैनों को यह नीत की चाल नहीं मालूम है कि अबलों पर अर्थात् स्त्रियों पर फौज की चढ़ाई नहीं करनी होती।

सिसुताई के अमल मै दबे रहत हैं नैन ।
मैन अमल (१) के होत कछु लगे पयानौ (२) दैन ॥
मीत बिदित ये बातही नैन तुम्हारे आइ ।
बरुनी कर जित देत है नेहन सीस चलाइ ॥ २४४ ॥
डीठ बरत (३) पर नैन चढ़ि कैयक पलटा लेत ।
देख तमासौ रीझि कै नेही मनधन देत ॥ २४५ ॥
जिहि मग दौरत निरदई तेरे नैन कजाक ।
तेहि मग फिरत सनेहिया किये गरेवाँ चाक ॥ २४६ ॥
आप बसाते बहुत सौं मन कौ कियौ बचाय ।
हौं न लची दृग लालचिन दीन्हो मनहि लचाय ॥ २४७ ॥
रसनिधि नैनन परि गई कछुक अनौखी बान ।
पीवतही छबि पल मधुर लगै लखेटी आन ॥ २४८ ॥
रूप ठगौरी डारि कै मोहन गौ चित चोरि ।
अंजन मिस जनु नैन ये पियत हलाहल घोरि ॥ २४९ ॥
गुरुजन नैन बिजातियन (४) परी कौन यह बान ।
प्रीतम मुख अवलोकतन होत जु आड़े आन ॥ २५० ॥
दृग द्विज ये उठि प्रातही करि अँसुवन असनान ।
रूप भूप पर जाचहीं छबि मुकताहल दान ॥ २५१ ॥

(१) अधिकार। (२) चलने लगे। (३) बरत = नट की रस्सी। (४) बीच में आनेवाले अर्थात् दलाल।

अरुन तगा (१) कै नैन जनु गरै जनेऊ डार ।
रूप दान मांगत रहैं ये पल करन (२) पसार ॥ २५२ ॥
त्रपत न मानत नैनं ये लेत रूप रस दान ।
रहत पसारैं लोभिया निस वासर पल पान (३) ॥ २५३ ॥
जब तैं वह सिर पढ़ि दियौ हेरन मैं हित बील (४) ।
पल घर मैं बैठत नहीं तब तैं दृग हुइ सील ॥ २५४ ॥
दृग मृग नैननि के कहूं फांद न पावै जान ।
जुलफ फँदा मुख भूमि पर रोपे बधिक सुजान ॥ २५५ ॥
मत चलाव मो सामुहैं इनकौं तैं अरु यार ।
नजर कटारी बांकुरी पल म्यानै पड़ यार ॥ २५६ ॥
रीझत आपु नजार कै लखि छबि नंदकुमार ।
मन कौं डारत वार जे नौखे दृग रिझवार ॥ २५७ ॥
नेह नगर मैं कहु तुहीं कौन बसे सुख चैन ।
मन धन लूटत सहज मैं लाल बटपरा (५) नैन ॥ २५८ ॥
देखत नैन न देखती यह डर मोहन ओर ।
आप लागि करिहैं करन मेरे मन पर जोर ॥ २५९ ॥
सुरत सहेली बाल छबि नित सँवार कै ल्याइ ।
दृग प्रीतम कौं देत है आछी भांति मिलाइ ॥ २६० ॥

(१) डोरा । (२) हाथोंको । (३) हाथ । (४) मंत्र । (५) डांकू ।

साधत इक छूटत सहस लगत अमित दृग गात ।
अरजुन सम बानावली तेरे दृग करि जात ॥२६१॥
तेरे नैन मसालची रूप मसाल दिखाइ ।
नेही तन तैं बिरह तम दीनो दूर भजाइ ॥ २६२ ॥
मेरे जान सुजान तुव नैन किलकिला (१) आइ ।
हृदय सिंधु तैं मीन मन तुरत सुधरि लै जाइ ॥२६३॥
सज्जन सांची बात यह यामै नहीं विबाद ।
बिना जीभ के लेत दृग मोहनरूप सवाद ॥ २६४ ॥
जे अखियां बैरा (२) रही लगै बिरह की बाइ ।
प्रीतम पग रज कौ तिन्हैं अंजन देहु लगाइ ॥२६५॥
हेरत मोहनरूप कौं बृजबाला न अघाइ ।
चहूं वोर तैं दौर कै दृग कोरन मिलजाइ ॥ २६६ ॥
अंजन होइ न लसत तौ ढिग इन नैन बिसाल ।
पहिराई जनु मदन गुर स्याम बंदनीमाल २६७ ॥
विदित न सनमुख ह्वै सकैं अखियां बड़ी लजोर ।
बरुनी सिरकिन वोट ह्वै हेरत मोहन ओर ॥ २६८ ॥
अवगाहे इन रूप निधि जब तैं नैन मलाह ।
तब तैं मन नृप चलत है इनही बूझि सलाह ॥ २६९ ॥

(१) नाम उस चिड़या जो मछली पकड़ली है और जिसको फारसी मे माहीखोर कहका हैं । (२) बिगड़ रहीं ।

जामैं ये छबि पावतीं छबि पावन्ता भात।
रसनिधि अखियां ताहियै नित अवलोकि सिहात॥२७०॥
दृग दुस्सासन लाल के ज्यों ज्यों खैंचत जात।
त्यों त्यों द्रोपदिचीर लौं मन पट बाढ़त जात॥२७१॥
बाहक दृग नँदलाल के अैंड़न अैंठी घाल।
आड़ि छुटावति मन हयन तुरत चलावत चाल॥२७२॥
दृग दरजी बरुनी सुई रेसम डोरे लाल।
मगजी ज्यों मो मन सियौ तुव दामन सौं लाल॥२७३॥
भावन्ता लखि लगत पल जानत कौं केहि हेत।
पल ओटन सौं नैन ये रूपस्वाद कौं लेत॥२७४॥
जब जब निकसत भावतौ रसनिधि इहि मग आइ।
नेह अतर लै डीठ कर लोचन देत लगाइ (१)॥२७५॥
बँहकाये तैं और के ये ही (२) तैं जानि बैकु (३)।
देखन दै मुखचंद कौ नैन चकोरन नेकु॥२७६॥
थिरकत सहज सुभाव सौं चलत चपलगत सैन।
मनरंजन रिझवार के खंजन तेरे नैन॥२७७॥
नींद निरादर देत हैं नेही दृग इहि आस।
कबहुँक देखौं उदित ह्वै भावंता दृग पास॥२७८॥

(१) इसीकारण नेत्रों में आंसू भर आता है। (२) हे हृदय। (३) बहक।

सिसक्यौ जल किन लेत दृग भर पलकन मैं आल।
बिचलत खैंचत लाज कौं मचलत लखिं नँदलाल॥२७९॥
दृगनि दृगन सौं मिल कियौ भेद प्रथमही जाइ
मै न दियौ मन उन लियौ मुहिसल मैन लगाइ ॥२८०॥
विधिवत छबि के फंद सौं नेही मन अभिराम ।
खंजन दृग लखि मीत कौं करत बधिक के काम ॥२८१॥
तुव दृग सतरँजबाज (१) सों मेरौ बस न बसात (२) ।
पादशाह मन कौं करै छबि सह (३) दै कर मात ॥२८२॥
दैन लगत है पास जब बिरह अहेरी आइ ।
प्रीतम रूप मवास बिच बचत नैन मृग जाइ ॥२८३॥
अंजन आंदू सौ भरे जद्यपि तुव गज नैन ।
तदपि चलावत रहत हैं झुकि झुकि चोटैं सैन ॥२८४॥
खैंचै अंकुस लाज के रूप पलक कर है न ।
धीरजद्रुम तोरत फिरैं गज कोमल तुव नैन ॥ २८५ ॥
रस रेसम मै जो दई गांठ अनख झकझोर ।
ते तुव दृग नख (४) माहिं सौं सहैजहि डारत छोर ॥२८६॥

(१) शतरंज खेलने वाला । (२) बस चलना, बिसात उस कपड़े वा तख्ते को कहते हैं जिस पर शतरंज खेलने के खाने बने रहते हैं । (३) किश्त, शतरंज के खेल की बोल चाल है । (४) नहा नाखून ।

डीठ लगत उर ईठ तन (१) इकटक सकत न हेर ।
तऊ लेत दृग लालची चोरी चोरा हेर ॥ २८७ ॥
बास्यौ सुमनसुबास तैं जब तैं पीतम आइ ।
तब तैं इन अलि दृगन पर पास न छोड़ौ जाइ॥२८८॥
ठगिया तेरे नैन ये छल बल भरे कितेव ।
कतरत पल मकराज सौं नेही मन की जेव ॥२८९॥
जुरत दृगन सौं दृगन की पल बागै मुर जाइ ।
पैने नेजा नजर के सौंहे उर उर जाइ ॥ २९० ॥
इनमैं होइ दरसात है हर मूरत की लोइ ।
यातैं लोइन कहत हैं इन सौं मिल सब कोइ ॥२९१॥
नैन बान जिहि उरछि दै ससकत लेत उसास ।
मीत सु उनकी है दवा मिलै न बैदन पास ॥२९२॥
उत अलगरजी चाहि इत लगी हियै सर सान ।
दृग अनुरागिन कौं परी कठिन दुहू बिधि आन ॥२९३॥
बिरह बांह कह सकत नहि होय गये अति छीन ।
नैन झिलमिली जान कैं पल बल बारे दीन ॥२९४॥
बदन कूप तैं रूपरस दृग बिन गुन भर लेत ।
और कूप बिन गुन पथिक प्यासे फेरी देत॥ २९५ ॥

(१) मित्रके शरीर में ।

लघु मिलनो बिछुरन घनो ता बिच बैरिन लाज ।
दृग अनुरागी भावते कहु कह करैं इलाज ॥ २९६ ॥
भूले लोभी नैन सौं छबि रस आये चाख ।
दृग तारे दे कै इन्है नजर बंद कर राख ॥ २९७ ॥
ताजी ताजी गतनि ये तब तैं सीखैं लैन ।
गाहक मन राजी करै बाजी तेरे नैन ॥ २९८ ॥
दृग नकीब ठाढ़े रहत पल पौरन यह हेत ।
मन मजलिस मैं मीत जहँ और झकन ना देत ॥ २९९ ॥
रूप इमारत मैं इन्है जौं तू दये लगाइ ।
दरस मजूरी दै लला नैन मजूरन आइ ॥ ३०० ॥
प्रथमहि नैन मलाह जे लेत सुनेह लगाइ ।
तब मझयावत जाय कै गहिर रूप दरयाइ ॥ ३०१ ॥
मन मैं आन न आनही अलबेले तुव नैन ।
तामैं भयौ हिमायती आइ सो इन कौ मैन ॥ ३०२ ॥
मीत बिरह की पीर कौ सकै न पल दृग कांध ।
रूप कपूर लगाइ कै प्रीत पटी सौं बांध ॥ ३०३ ॥
गैना नैना लाल के हित मै जानत नाह ।
नहे नेह की बहल मै घुरला जानत नाह ॥ ३०४ ॥
बनै जहां के तहँ रहै लगै होइ उर पार ।
बिधि तोही कौं रचि दियौ ऐसे दृग हथयार ॥ ३०३ ॥

प्रथमहि दारू खाइ कै पीछै गोली खाहि ।
तेरे नैन बँदूक ये चोटहि चूकत नाहि ॥ ३०६ ॥
गुरुजन डर सौं चतुर ई बरुनी झिलमैं डार ।
निधरक प्रीतम बदन तन अखियां रहीं निहार ॥३०७॥
रसनिध मोहन रूप तौ जिहि मै तिहि सरसाइ ।
तिनकौ राखौ नेहियन नैन माझ ठहराइ ॥ ३०८ ॥
टौना आँखि बस करन कौ करे हते इन जाइ ।
अब उलटे रौना पर्‌यौ गरै दृगन के आइ ॥ ३०९ ॥
मन सुबरन घरिया हियौ लाल सुहाग मिलाइ ।
दृग सुनार हित आंच दै कुन्दन कियौ तपाइ ॥३१०॥
रूप लोभ बस मिल गये नैन पहरुवा जाइ ।
तबलौं तौ चितचोर नै मन धन लियो चुराइ ॥३११॥
नैन सनेहन के मनौं हलबी सीसा आइ ।
गुपत प्रगट तिन मैं सदा मीत सुमुख दरसाइ ॥३१२॥
जालिम नैनन के जुलम कहियै काके पास ।
पल पल खैंचत रहत है पल सँड़सिन सौं मास ॥३१३॥
मोहनमुख लखि आपुही ये सरसावत हेत ।
चाह बावरी माझ दृग मन कौं गोता देत ॥ ३१४ ॥
एक नजरिया के लखै जो कोइ होइ निहाल ।
तौ यामै तुव गांठ कौ कहा जात है लाल ॥ ३१५ ॥

तनिक किरकिटी के परे पल पल मै अहटाय ।
क्यौं सोवै सुख नींद दृग मीत बसै जब आय ॥३१६॥
नैना मोहनरूप सौं मन कौं देत मिलाइ ।
प्रीत लगै मन की बिथा सकैं न ये फिर पाइ ॥३१७॥

सोरठा ।

रूप नगर मैं नैन, निसि दिन फेरी देत है ।
मोहन मूरत मैन, दरसन भिखिया के लिये ॥३१८॥

दोहा ।

धरे हते मुहरा घनै मैलै हियौ बिसात ।
मो मन साहिय कौं करौ तैं दै दृग सह मात॥ ३१९ ॥
बरुनी बन्दनवार रचि पल मंडफ द्विज मैन ।
छबि धन सौं चित चाय सौं भरत भावरे नैन॥ ३२० ॥
मेरेई दृग मीतकर जौ मन आवै बैंच ।
तौ याके इनसाफ कौं काहि बुलाऊँ खैंच ॥ ३२१ ॥
दृग माली ये डीठ कर निरखि रूप की बेल ।
लेत सु चुन छबि की कली पल झोरिन सौं झेल ॥३२२॥
तीन पैंड़ जाके लखौ त्रिभुवन मै न समाइ ।
धन राधे राखत तिन्हैं तूं दृग आधिन माइ ॥ ३२३ ॥
मेरे नैननि ह्वै लखौ लाल आपनौ रूप ।
भावत है गौ भावतौ कैसी भांति अनूप ॥ ३२४ ॥

मन गरुवौ कुच गिरिन पै सहजै पहुँच सकै न।
याही तै लै डीठ के पैरे (१) बांधत नैन ॥ २२५ ॥
मन धन तो पै भावते जे वारैई देत।
दृग चोरन बन के हियो क्यौं वारैई देत ॥ ३२६ ॥
नेहनि उर आवत लखौ जबहीं धीरज सैन।
सैफी हेरन मै पटे कैफी तेरे नैन ॥ ३२७ ॥
पीवत नहीं अघात छिन नाही कहत बनै न।
पलवो (२) कै बांधे रहै छबिरस प्यासे नैन ॥ ३२८ ॥
सुहृद जगत मैं दृगन से रसनिधि दूजे नाहि।
बड़े दृगन लखि आप तौ तन मन हियौ सिहाहि ॥ ३२९ ॥
नैन अनी जब जब जुरै रूप बनी मै आइ।
तब तब आड़ी बीच मै लाज परत है आइ ॥ ३३० ॥
पल जौरन के दृग पला जब तैं सिखये मैन।
तब तैं नेही चित छला लगे लला कौ दैन ॥ ३३१ ॥
भरत सांस लै हर घरी रूप दरस की आस।
तृषित दृगन की मिटत कहुँ आंसू घूँटन प्यास ॥ ३३२ ॥
तृषित दृगन की तृपति जौ ध्यान धरै तै होइ।
ओसन बुझती प्यास जौ नीर न पीतौ कोइ ॥ ३३३ ॥

(१) सीढ़ी। (२) चुल्लू।

नैन कमल ह्यां लगत है कमल लगत है वाइ ।
कमलनाल सज्जन हियौ दौनौं येक सुभाइ ॥ ३३४ ॥
जादूगर तुव दृगन यह यौं कर लियौ सुतंत्र ।
तब तैं वाहि न फुरत है तंत्र न जंत्र न मंत्र ॥ ३३५ ॥
बिना तमाखू सूरती छबि बीरा न मिठाइ ।
परौ अनौखौ अमल यह गरै दृगन के आइ ॥ ३३६ ॥
अपनै से दृग लागनै जो तूं लखतौ और ।
तौ तेरोऊ चित लला नैक न रहतो ठौर ॥ ३३७ ॥
मै दीनौ उननै लियौ मन धन देखत अैन ।
बूझे मुकरे जात हैं अब काहे तुव नैन ॥ ३३८ ॥
बैपारी दृग मीत के तिनही बाले देत ।
बधी बाँध कै बाट की बिन जोखे मन लैत ॥ ३३९ ॥
कछू सु लोच न नखन मै लाल सुलोचन आइ ।
चित चेरौ जातै सुचित बहुर न सकियतु पाइ ॥ ३४१ ॥
तिल चुन लालच लाग कै दृग खंजन चल जाइ ।
जुलफ फँदा तै जौ बचै दृग फन्दन परि जाइ ॥ ३४१ ॥
रिस रस दधि सक्कर जहां मधु मधुरी मुसक्यान ।
घृत सनेह छबि पय करै दृग पंचामृत पान ॥ ३४२ ॥
गढ़ि गढ़ि जो छबि के छला पल मै करै तयार ।
ये नौनै पहिराइ है तुव दृग मीत सुनार ॥ ३४३ ॥

नैन लगर (१) घूघट खुलहि पवन खोल जब लेत ।
नेही मन किरवान (२) कन झपट सतूना देत ॥ ३४४ ॥
दीन्हौ नेहन कौ अमी मद असनेहन प्याइ ।
हियौ समुद मनमथ मथौ तामै ते दृग ल्याइ ॥३४५॥
फोरत बानै ढाल कै तनिक लगाये मैन ।
अचरज कहि भेदौ जु मन मैन भरे सर नैन ॥ ३४६ ॥
अरी करेजै नैन तुव सरसि करेजे वार ।
अजहूं सुरझत नाहिं ते सुर हित करत पुकार ॥३४७॥
सोहत हैं यह भांति जे भावंता के नैन ।
तारे मधुकर कमल दल बैठे जनु रस लैन ॥३४८॥
प्रगटत अंजन लीक छबि अहिसावक मति जान ।
अलक भुअंगम देख जनु सकुच रहे जस मान ॥३४९॥

सोरठा ।

होइ कौंन तन धीर, कह्यौ तू मोसो यहै ।
नैन अन्यारे तीर, जो घालै या जिहि लगै ॥३५०॥
मेरे नैनन जाइ, मिल हरि कीनी मिलहरी(३) ।
मन धन दियौ बताइ, रसनिधि मोहन चोर कौं ॥३५१॥

(१) एक किस्म की शिकारी चिड़िया जिस को बाज कहते हैं ।
(२) एक किस्म की चिड़िया । (३) मेल ।

क्यौं न रसीले होंइ दृग जे पोषे हित लाल ।
खाटे आम मिठात हैं भुस मै दीनै पाल ॥ ३५२ ॥
पल अंजुल जोरे कहै दो हा (१) सौं बिच सैन ।
मनमोहन सौं रुचिर छबि रुचि सौं मागत नैन ॥३५३॥
दरसाति जब बाढ़ी हती सो तुम दृगन न दीन ।
अरुनिन फिरयादी जहै बसन भगौंहैं कीन ॥३५४॥
तेरी यह अदभुत कथा कही जाइ नहि बैन ।
चित चीतन कौं तैं कियै अरी सेर मृग नैन ॥३५५॥
तुव दृग नागर सुघर जे वाहि न लेते मोल ।
को लै सकतौ लालमन रसनिध अधिक अमोल॥३५६॥
जान जान कीनै जु तैं नेहन ऊपर वार ।
भरे जु नैन कटाछ के खंजर पंजर फार ३५७॥
यातैं पल पलना लगत हेरत आनदकंद ।
पियत मधुर छबि दृगन के जात ओठ ह्वै बंद॥३५८॥
एरी ये बलि राधिका तोसौं दूजी नाहि ।
राख्यौ मदनमनोहरै जड़ दृगतारन माहि ॥ ३५९ ॥
अनियारे दृग बान की रसनिधि बांकी चोट ।
रुकत न रोकै कैसहूं धीरज ढालन ओट ॥ ३६० ॥

(१) हा हा ।

यह छोटे बित नैन ये करत बड़े से काम ।
तिल तारन बिच लै धरे मोहन मूरति स्याम ॥३६१॥
हीरा बिन हीरा कनीं कहूं न बेधी जाय ।
मो हीरा(१) तुव दृग कमल सहजै बेधत आय॥३६२॥
लाल तिहारे दृगन कों मैं गुनाह कह कीन ।
छतना (२) सी छतियां करी छेदि सघन बरुनीन ॥३६३॥
बरजि राख बटपार ये अरी आपने नैन ।
मन मथिबे कों मनमथहिं देत चवाई सैन ॥ ३६४॥
हीरा हाथ न आवही बिना दिये कछु माल ।
मो हीरा बिन गथ लियौ नैन जौहरिन लाल॥३६५॥
मदन बारिगर (३) तुव दृगन धरी बाढ़ जो मित्त ।
याके हेरत जात है कट कट नेही चित्त ॥ ३६६ ॥
और चोर चित लेत है दृग ओझिल ह्वै चोर ।
मन धनि चोरत भावतो नैन नैन सौं जोर ॥३६७॥
राखे है सुर मदन ये ऐसेही चरबाक ।
पैनी भौंहन की दरी अध नैननि कौं बांक (४) ॥३६८॥
रसनिधि आवत देखि कै मनमोहन महबूब ।
उमड़ी डिठ बरुनीन की दृगन बधाई दूब ॥ ३६९ ॥

(१) हियरा अर्थात् हृदय । (२) मधुमक्खी का छाता ।
(३) सिकलीगर । (४) नाम हथियार ।

पीवत पीवत रूपरस बढ़त रहै हित प्यास ।
दई दई नेही दृगन कछू अनोखी प्यास ॥ ३७० ॥
बात चलत जाकी करै असुराई नेहींन ।
है कछु अदभुत मदभरे तेरे दृगन प्रवीन ॥ ३७१ ॥
राख्यौ है मन लाज के दृग द्वारे दरवान ।
बिना नेह परवानगी सुचित न पावे जान ॥ ३७२ ॥
रूप नगर मैं फिरत हौ छबि सौदा कौं लेत ।
रोक्यो नैन जगातियन मन जगात के हेत ॥३७३॥
नेही नैन निवाज कौ समौ न बीतन देत ।
तू मौहन महराव बिच दोरा कावड लेत ॥ ३७४ ॥
रेसम डोरे लाल लै बरुनी सुइयन अैन ।
नेही उर दरजी (१) सियै दरजी प्रीतम नैन॥३७५॥
पुरजा पुरजा करत है प्रथम करेजा थान ।
फिर बरनी सूजन सियै दरजी नैन सुजान ॥३७६॥
श्रमित भयौ तोपौ उतू बिच पल पलकनि आइ ।
रुचिर भांत सौभावते नैन पलोटै पाइ ॥ ३७७ ॥
हेरत जित ये सहजही तुव दृग सुभट अमोर (२) ।
मुर (३) मुर जाती नैन की सैना जुरी करोर ॥ ३७८॥

(१) फटा हुवा, जिसमे दर्ज हो। (२) जो पिछे न हटै।
(३) लौट लौट जाती है।

असनेहनि हित नगर मै सकत न कोऊ खूट ।
चतुर जगाती लाल दृग लेत सनेहन लूट ॥३७९॥
जे बोजा बिजया पियै तिनपै आवत हैफ ।
मनमोहन दृग अमल मै क्या थोरी है कैफ ॥ ३८० ॥
बर जे बुध बल नार हैं खंजन नैन भुलाइ ।
अटके तिल चुन लालचन जुलफ फँदा मै जाइ ॥३८१॥
बहुधा बैरी गोतके सही गोतियन जान ।
बड़े नैन खटकन लगे नैन हीये मै आन ॥ ३८२ ॥
नेही सनमुख जुरतही तहँ मन की गिरवान ।
बाहत हैं रन बावरे तेरे दृग किरवान ॥ ३८३ ॥
प्रीतम नैन कजाक तुव छबि मन माह मिलाइ ।
हित गथ जापै देखही ताही लूटत जाइ ॥ ३८४ ॥
मोहन जौ दृग जिहि मतन उझकाई दै जाइ ।
ज्यौं थोरौ पथ देत है बैद रोगियै आइ ॥ ३८५ ॥
जदपि बदन सर जगत मै छबि रसभरे गँभीर ।
दृग चातक छन स्यामतन तलफत झाकत तीर ॥३८६॥
चरच जात ज्यौं लखतही नैनन की गत नैन ।
यह पहिचानत रसिकनिध चोर चोर की सैन ॥३८७॥
मिल बिस्वास बढाइ कै चित बित लेत चुराइ ।
राखत नैन कजाक तुव छबि बन मांह दुराइ ॥ ३८८ ॥

भरी अमित छबि तो द्दगन सबजग बोलत साख ।
याहू नान्हे सै मनै बिच दृग कोयन राख ॥ ३८६ ॥
जब सै तैं पैंने किये दृग छबि सांन चढ़ाइ ।
तब तैं मन दैनै कहे नेह न रीझ सिहाइ ॥ ३९० ॥
हेरौ ओर हमारियै प्रीतमनैन बिसाल ।
बड़े होत ते करत हैं छोटन कौं प्रतिपाल ॥ ३९१ ॥
अरुन अन्यारे जे भरे अतिही मदन मजेज ।
देखे तुव दृगवारबे रब (१) सुकराना भेज ॥ ३९२ ॥
प्रीतम आवत जानिकै भिस्ती नैन सिताब(२) ।
हित मग मै कर देत है अँसुवन कौ छिरकाव ॥ ३९३ ॥
नट बट तेरे दृगन के कौन सकत है पाइ ।
पल प्यालन मै दृग बटा देखत धरे छिपाइ ॥ ३९४ ॥
बधिक कसाइन तैं बचौ ये बेदरदी अैन ।
विधि भरि दीनी तैसही बिच महबूबा नैन ॥ ३९५ ॥
रिझकबार दृग देखि कै मनमोहन की ओर ।
भौह न मारत रीझ जनु डारत है त्रन टोर ॥ ३९६ ॥
चिबुक कूप मध डोल तिल डार अलक की डोर ।
दृग भिस्ती करकर पलक छबिजल भरत झकोर ॥ ३९७ ॥

(१) परमेश्वर (२) जलदी।

हरे सुछबि तृन चरत ये मन मृग रूप कछार ।
सिंह रूप तुव दृग लखै गिरत सु खाइ पछार ॥ ३९८ ॥
पथिक आपने पथ लगौ इहाँ रहो न पुसाइ ।
रसनिध रूप सराइ मै बसौ भावतौ आइ ॥ ३९९ ॥
छबि बन मै दौरन लगे जब तैं तुव दृगमेव ।
तब तैं कढ़ै सनेहिया मन छन लैकै छेव ॥ ४०० ॥
प्रीत पान नवरस कथा चूना नेह लगाइ ।
प्रीतममुख दृग डीठ कर बीरा देत बनाइ ॥ ४०१ ॥
याही तै जानी गई नैना मेरे हैं न ।
आपु रीझ मन कौं लगे बेदरदिन कर दैन ॥ ४०२ ॥
प्रीतम बदन सुदेस पै साजी सैना सैन ।
चहत पेस रूपक सदन रसनिधि लोभी नैन ॥ ४०३ ॥
हम रीझे मनभावते लखि तुव सुंदर गात ।
दीठ रूप धर लाल सिर नैना सौंहैं खात ॥ ४०४ ॥
डीठ डोर नै मोर दिय (१) छिरक रूपरस तोइ ।
मथि मो घट प्रीतम लियौ मन नवनीत (२) बिलोइ ॥ ४०५ ॥
मनहूं की गति करत है ये पल पल मै पंग ।
करत खुरी पल मै अमित तेरे नैन तुरंग ॥ ४०६ ॥

(१) मठा भान को मोरना कहते हैं। (२) नैन् ।

तबतैं पल(१)कर(२)और तन पलक(३)पसारत है न ।
जबतैं छबि धन मीत दै किये अजाची नैन ॥४०७॥
तुव दृग बाजन देखि कै तुरत उठंत है कांप ।
मन पंछिन कौ लेत जे पल चंगुल सौं चांप ॥४०८॥
रूप लालचिन नै दरे सुध बुध सबै बिसार ।
दरस भीख के काज दृग पल कर रहे पसार ॥४०९॥
अँसुवा होइ न डीठ उर ये अखियाँ रिझवार ।
पल अँजुरिन जल मीत पै पानी पीवत वार॥४१०॥
नैन कबूतर मीत के गिरहबाज से आइ ।
पल मै गिरहै लै मनहु नेह गिरह दै जाइ ॥४११॥
तेगा ये दृग मीत के पानिपवार सुघाट ।
अंजन बाढ़ दियै बिना करत चौगुनी काट ॥४१२॥
मीत नैन महासिल(४)नये बैठत नहि हुइ सील ।
तन बीघा पै करत हैं ये मन की तहसील ॥४१३॥
मद मोकल (५) जब खुलत हैं तेरे दृग गजराज ।
आइ तमासौ जुरत है नेहीनैनसमाज ॥४१४॥
रुकत न खंजन नैन ये जतन कीजियत कोर (६) ।
प्रीतम मन तन चलत है पल पिंजरन कौं तोर॥४१५॥

(१) पलक। (२) हाथ। (३) चणक अर्थात् कभीनहीं।
(४) तहसीलदार। (५) मतवाले। (६) करोड़।

जब छूटत घल थान तैं मतवारे गज नैन ।
नेहिन दल कौं चलत हैं दैकर ठोकर सैन ॥४१६॥
दृग खंजन औचक फँसे बीच जुलफ के जाल ।
भावै इनकौं कर जिभै (१) भावै इनकौं पाल ॥४१७॥
अरे मीत तैं आपनै दृग साथियन फुरमाइ ।
काटैं गांसी बिरह की पल संसिन सौं आइ ॥४१८॥
कर राते लखि गुरुजनन कर रुष रूषे नैन ।
हितरातेन दलाल सौं बतराते बिच सैन ॥४१९॥
तरक चलत है नैन ये औरन कौ मुख हेर ।
मन के कर कर दृगन कौं देत मीत मन फेर ॥४२०॥
मचल जात हैं नैन ये समुझाये समुझै न ।
बदनचंद के लखन कौं सिसज्यौ विरझत नैन ॥४२१॥
आये तेरे दृगन पै जे महूम अखत्यार(२) ।
किते न मनसूबा गये इनसौं जुरकै हार ॥४२२॥
भौंह कुटिल बरुनी कुटिल नैना कुटिल दिखात ।
बेधन कौं नेही हियो क्यौं सूधे ह्वै जात ॥४२३॥
मन धन लै दृग जो हरी चले जात वह बाट ।
छबि मुकता मुकते (३) मिलै जिहि सूरत की हाट ॥४२४॥

(१) (फारसी) गला काट कर मारना।
(२) चढ़ाई करके आये। (३) बहुत ज्यादा।

कसक बनी तब तैं रहै बँधत न ऊबर खोट ।
दृग अनयारिन की लगी जब तैं हिय मै चोट ॥४२५॥
नैनबान जिहि उर छिदै कसकत लेत न साँस ।
मीतहि उनकी है दवा मिलै न बैदन पास ॥ ४२६ ॥
निसवासर लोचत रहत अपनौं (१) मन अभिराम ।
यातैं पायौ रसिकनिधि इनकौं लोचन नाम ॥ ४२७ ॥
लौ इनकी लागी रहै निज मनमोहन रूप ।
तातैं इन रसनिधि लयौ लोयन नाम अनूप ॥ ४२८ ॥
जो कछु उपजत आइ उर सो वे आंखैं (२) देत ।
रसनिधि आखैं नाम इन पायौ अरथ समेत ॥ ४२९ ॥
और रसनि लै जानही रसनाहू अभिराम ।
चाखत जे ये रूपरस यातैं है चख नाम ॥ ४३० ॥
भरभराँय देखै बिना देखै पल न अघाँय ।
रसनिध नेही नैन ये क्यौं समुझाये जांय ॥ ४३१ ॥
नैन किलकिला (३) मीत के ऐसे कछू प्रबीन ।
हियसमुद्र तैं लेत हैं बीन तुरत मनमीन ॥ ४३२ ॥
जिन नैनन कौं है सही मोहनरूप अहार ।
तिनकौं बैद बतावही लंघन कौं उपचार ॥ ४३३ ॥

---

(१) अब इनौं । (२) कहदेत (पंजाबी बोली है) (३) एक प्रकार का पक्षी जो मछली पकड़ता हैं—फारसी मे उसको माहीखोर कहते हैं ।

घाइल दिल की जौ कहूं उन्हैं ब्यापती पीर।
प्रीतमबधिक न घालते दृगअनियारे तीर ॥ ४३४ ॥
पल पल्लौभर (१) इन लिया तेरा नाज (२) उठाइ।
नैन हमालन (३) दे अरे दरस मजूरी आइ ॥ ४३५ ॥
सुरँग बछेरे नैन तुव जद्यपि हैं नाकन्द।
मन सौदागर ने कह्यो यही हैं बहुतक परसन्द ॥ ४३६ ॥
गुरुजन बाहक जदपि पुन घालत चाबुक सैन।
कटै बटै न कढ़ै तऊ रूप अवन ह्वै नैन ॥ ४३७ ॥
होती जोपै बचत कहुँ धीरज [illegible] ओट।
चतुरन हिये न लागती नैनबान की चोट ॥ ४३८ ॥
हितकर रसनिधि हेरिबौ मुसकैबौ अनखान।
भीतदृगन लखि लेत हैं नेहन के दृग जान ॥ ४३९ ॥
रसनिधि दृग कामारथी छबि बेनी जल ल्याइ।
बिनै स[illegible]त मन संभु कौं नितही देत चढ़ाइ ॥ ४४० ॥
छबि मिसरी जब तैं दई तुव दृग बाजन (४) मैन।
मन कुलङ्ग कौं धरत हैं ये बिच चंगुल सैन ॥ ४४१ ॥
जिहि वारौ नँदलाल पै दृग आये मन वार।
पलहू भर पावैं नही वह मूरति वर वार ॥ ४४२ ॥

---

(१) (फ़ारसी) पल्लेदार। (२) नाज, और अनाज।
(३) पल्लौदार मजदूरा। (४) शिकारी चिड़िया।

खोर आपनै दृगन की धरिये किहि सिर ईठ ।
ससि एकै द्वै सूझही यहै बिबर जै दीठ ॥४४३॥
चुभती जौं नहिं दृग अनी त्रिभुवनपति उर आइ ।
देतौ जावक रुचिर वह क्यौं ब्रजबालन पाइ ॥४४४॥
रे तबीब यह बात तैं अपनै ग्रंथन हेर ।
दृग गाँसी जिहि उर गड़ि सो कहुँ निकसी फेर ॥४४५॥
साहु कहावत फिरत हैं चित सरसाये चाव ।
तेरे नैन दिवालिया (१) मन लै दैंहि न पाव(२) ॥४४६॥
हेरतही जाके छके पलहू उझकि सकै न ।
मन गहनै धर मीत पै छबिमद पीवत नैन ॥४४७॥
प्रीत चलावै जित इन्हैं तितै धरैं ये गैन ।
नेह मनोरथ रथ रहैं ये अबलख हय नैन ॥४४८॥
उपजत जीवनमूर जहँ मीत दृगन मैं आइ ।
तिनके हेरैं तुरतही अतन सतन ह्वै जाइ ॥ ४४९ ॥
प्रेम नगर मैं दृग बया (३) नोखे प्रगटे आइ ।
दो मन कौं कर एक मन (४) भाव दियौ ठहराइ ॥४५०॥
अद्भुत रचना बिधि रची यामैं नहीं बिबाद ।
बिना जीभ के लेत दृग रूप सलौनो स्वाद ॥४५१॥

(१) मन हृदय और ४० सेर का मन। (२) मन लेकर पावभर भी नहीं देते। (३) तौलने वाले।

है कै लोभी लोभबस छबि मुकताहल लैन ।
कूदत रूपसमुद्र मैं अकधक करत न नैन ॥४५२॥

सोरठा ।

जोती डोरे लाल, पलकन के कर कै पला ।
तारे बाट बिसाल, जोखत हर दृग रूपधन ॥४५३॥

दोहा ।

जो भावै सो कर लला इन्हैं बांध भा छोर ।
हैं तुव सुबरन रूपके ये दृग मेरे चोर ॥४५४॥
रूप नगर मैं बसत हैं नगरसेठ तुव नैन ।
मन जामिन लै नेहियन लगे पुंजी छबि दैन ॥४५५॥
तारनही के बाट लै घर बिच पलक पलान ।
तौलत हैं दृग लोभिया मोहनरूप कलान ॥४५६॥
पहिराये नृप रूप तुव जब तैं नैन दिवान ।
तब तैं लै नेहीन के मन धन लगे कमान ॥४५७॥
मोहनमुख की जोत दृग देखत हैं दिन रैन ।
रसनिधि निरगुन बात कौं जे परखतहू हैं न ॥४५८॥
मोहनछबि दरियाव की जदपि सुथाह लिहै न ।
छबि लालच लगि रहत हैं बैठ किनारे नैन ॥४५९॥
नैनन कन्धे धौरियन अरे नहीं धुर लाइ ।
कैसे मन कौं बोझ धर चरलौं सकै चलाइ ॥ ४६० ॥

दृग नौकै याही लिये राखी बाढ़ धराइ ।
नेहिनही पै लेत हैं ते अजमाइसु आइ ॥ ४६१ ॥
भरत ढरत जलकन पलन पलहू ठहर सकै न ।
भये कौन के नेह सौं तेरे चिकनै नैन ॥ ४६२ ॥
रूप महावत नैन गज मैन सु आइस पाइ ।
नेही मन हय जोरही देत झुकाइ झुकाइ ॥ ४६३ ॥
वाकौ सिरतौ गांठ कौं चितवित चोरै लेत ।
नेही दुरबल दृगन कौं दरस न काहे देत ॥ ४६४ ॥
यों छबि पावत हैं लखौ अंजनआंजे नैन ।
सरस बाढ़ सैफन धरी जनु सिकलीगर मैन ॥ ४६५ ॥
लालरूप के अमृतफल दृग द्रुम लागत आइ ।
याही तें बिधि नै दई बरुनी बार बनाइ ॥ ४६६ ॥
पीवतहू न अघात हैं छबिरस प्यासे नैन ।
पल वाकैं बाँधे रहैं नाहीं नैक कहैं न ॥ ४६७ ॥
घालै नैन कटारियाँ जेते सरस सुपान ।
कसकत ये उर मैं रहैं कहत न बनै जुबान ॥ ४६८ ॥
रूप बधिक दृग कर सलाहि रोपै लै छबि जाल ।
नेही खंजन नैन ये बिधये हेरत हाल ॥ ४६९ ॥
रिझवार दृग देखि कै मनमोहन की ओर ।
मौंहन मोरत रीझ जनु डारत है न निहोर ॥ ४७० ॥

रूप सरोवर माहि तुव फूले नैन सरोज ।
ता हित अलि नेही तहाँ आवत दौरे रोज ॥ ४७१ ॥

अथ डीठवर्नन ।

या ब्रज मै हौं बसतही हेली आइ सुतंत्र ।
हेरन मैं कछु पढ़ि दियौ मोहन मोहन मंत्र ॥ ४७२ ॥
आले घाइन आइ भर हेर नहरुवा नीम ।
मृदु मुसक्यान सो ओषधी जो नाहिं देहु हकीम ॥४७३॥
अरे बैठ रहु जाहु घर कत भटकत बेकाज ।
चितवन टोना कौ कबौं होना नहीं इलाज ॥ ४७४ ॥
रसनिधि आवत देखि कै मनमोहन महबूब ।
उमग डीठ बरुनीन की द्दगन बधाई दूब ॥ ४७५ ॥
चतुर चितेरे तुव सबी लिखत न हिय ठहराइ ।
कलम छुवत कर आँगुरी कटी कटाछन जाइ ॥४७६॥
नैक नजरिया के लखै जौ कोउ होइ निहाल ।
तौ यामैं तुव गाँठ कौं कहा जात है लाल ॥ ४७७ ॥
औरनि कहु तान दीठ जहँ लख आवत कर गौर ।
रसनिधि अपनै मीत की वह हेरन कछु और ॥४७८॥

भावबर्नन ।

यह उर द्दग नहिं लख सकै सूधे मोहन ओर ।
बदन कमल मै गड़िहैगी बरुनी अनी कठोर ॥४७९॥

करि उपाय बहुतौ थके काढ़े कढ़ते नाहिं ।
रूप बदन के जे पला हेरतही चुभि जाहिं ॥ ४८० ॥

अथ भौंह बरनन ।

उपमा भौंहन जो दई लहै न एते साज ।
टेढ़ी पैनी स्याम अति जैसे नाखन बाज(१) ॥४८१॥
मेरे मन के बध दये जबतें इन्हें लगाइ ।
फिरै न भौंह कमान तूं अरबरही ठहराइ ॥४८२॥

अथ श्रवन बरनन ।

श्रवत रहत मन कौं सदा मोहन गुन अभिराम ।
तातें पायौ रसिकनिधि श्रवन सुहायौ नाम ॥४८३॥

केस बरनन ।

मीता मन वा बँधनि तैं कौन सकै अब छोर(२) ।
बाँधि लियौ तैं वह अरे गिरह जुलुफ की डोर ॥४८४॥
वह बिधुबदनी के लखे खुले छबीले बार ।
बस्यो मनौ तम आइ कै ससिमुख के पिछवार ॥४८५॥

उरोज बरनन ।

पुरयन बिच कंचुक अरी ता बिच कली उरोज ।
गुंजत अलि मन जाइ तहँ उर सरसाइ सरोज ॥४८६॥

---

(१) बाज को नोह, नख । (२) छोर = खोलने का व्यापार दूसरा छोर किनारा ।

कटि बरनन।

नेहीमन कटि जात लखि प्रीतम कटि अभिराम।
करि करि ऐसौ काट यह पायौ है कटि नाम ॥४८७॥

मन बरनन।

मन गयंद छवि मद छके तोर जँजीरन जात।
हित के झीनै तार सौं सहजैहीं बँधि जात ॥४८८॥
जोरति है मन जतनि कै बहुतक धीरज घेर।
बिथुर जात है तुरतही मीत सैन कों हेर ॥४८९॥
दृग तौ आवत बांधि कै निकट बदन अभिराम।
डीठ बरत पै धार कै मन बट नटही काम ॥४९०॥
जो कहियै तौ साँच कर को मानै यह बात।
मन के पग छाले परे पिय पै आवत जात ॥४९१॥
मन बदले भव सिंधु तै बहुत लगाये घाट।
मनही के घाले गये बहि वर बारहबाट ॥४९२॥
मन निहिचल मन चंचला मन सुजान मन कूर।
मन बैरी मन सज्जना मन कायर मन सूर ॥४९३॥
मन मैला मन निरमला मन दाता मन सूम।
मन ज्ञानी अज्ञान मन मनहि मचाई धूम ॥४९४॥
मन गज मद मौकल भयौ रहत न अपनै हाथ।
लग्यौ रहत पर मोह कौ पीलवान चित साथ ॥४९५॥

उड़ौ फिरत जो तूल सम जहां तहां बेकाम ।
ऐसे हरुये कौ धर्‌यौ कहा जान मन नाम ॥ ४९६ ॥
मिहिर नजर सौं भावते राख याद भर मोद ।
अनखनि खनि अनखनि अरे मत मो मनहि करोद॥४९७॥
को अवराधे जोग तुव रहु रे मधकुर मौन ।
पीताम्बर के छोर तैं छोर सकै मन कौन ॥४९८॥
द्दग जहाज मन जौहरी भन रच लौ छबि खेप ।
रूपसिन्धु मै फिरत है करत न पल बिच्छेप ॥४९९॥

छबि बर्नन।

तुव छबि सौंहनि सौं अरे जो मन लागत आइ ।
हित अनहित दुहु बीचही पलपल छीजत जाइ॥५००॥
जाहि जबहि पनिया भरन मोहन छबि छकि नार ।
रीते घट धर लेत सिर देति भरन कौ डार ॥५०१॥
छबि धन दै नँदलाल ये किये अयाची आइ ।
पल कर तब तैं और पै द्दग न पसारत जाइ ॥५०२॥
जब तैं छबि फेरौ परौ यह मन मेरौ आइ ।
तब तैं रसनिधि सांवरे उझकत हैं द्दग आइ ॥५०३॥
निरख छबीले लाल कौ मन न रहौ मो हाथ ।
बँधौ गयौ ता बसि भयौ छबीदान के साथ ॥५०४॥

जाही बनतन मदन नृप मंजिल देत फुरमाइ ।
छबि लसकर के होत हैं ताही डेरा आइ ॥ ५०५ ॥
पल प्यालन छबिमंद सु भर प्यावत नैन कलार ।
मन गहनै धर पियत है रसनिधि मन रिझवार ॥५०६॥
तुव छबि बन मे मन पथिक क्योंहू निबहत नाहिं ।
नैन कजाकन तें बचै चिबुक कूप पर जाहिं ॥ ५०७॥
धनुष पाइ दुइ कौन ये लच्छ लच्छ तन जाइ ।
दृगन धनी छबि लच्छ कौ नवै तै उचितै आइ ॥५०८॥
मटकी मटकी सीसधर चल कछु बकि मुसक्याइ ।
लखि वह घटकी सुधगई छबि अटकी दृग आइ ॥५०९॥
बनवारी वारी गई बनवारी पै आज ।
मन वारी हर लै गयौ वा मोहन ब्रजराज ॥ ५१० ॥
घैर मथन सुनियत रहै जहां तहां ब्रज भौन ।
मोहन छबि छकि नागरी सोच नागरी कौन ॥५११॥
बाढ़ी सुन्दरता अधिक हरिहर अंग अनेक ।
कितै कितै हेरै अरी डीठ विचारी येक ॥ ५१२ ॥
करत जतन बल बहुत सौं नैकहु निकस सकै न ।
छबि चहले मै जा फँसे विरहदूबरे नैन ॥ ५१३ ॥
मति चुकार देते सुझै दै चुकाइ छबिदान ।
रे नटनागर नन्द के सुन्दर स्याम सुजान ॥ ५१४ ॥

रूप नगर मै बसत है नगरसेठ तुव नैन ।
मन जामिन लै नेहियन लगे पुँजी छबि दैन ॥५१५॥
छबि चुन दै दृग खंजनन कै दे रे मुकलाइ (१) ।
बँधे प्रीतगुन सौं उठैं पलपल मै उकलाइ ॥५१६॥
रसनिधि प्रेम तबीब यह दियौ इलाज बताइ ।
छबि अजवाइन लख दृगन बिरह गिरानी जाइ॥५१७॥
प्रीतम मरजी के भये जबि जु मरजिया आइ ।
छबि मुकता उनही लहे रूपसमुद मैं जाइ ॥५१८॥
दृग रिझवारन हिय रहै यहै परेखौ (२) एक ।
वारन कौ मन एक इत उत है अदा अनेक ॥५१९॥
जो छबि मदनेही दृगन देखत ही चढ़ि जाइ ।
जातन सीसा मै भरौ असर करै नहिं ताइ ॥५२०॥
लसत आरसी कौ हरा प्रीतम वर यह बान ।
गरै परौ जनु रीझ छबि सस धर कोट कलान ॥५२१॥
मदन परब कौ पाइकै जुरी रूप की जात ।
दृग मन धन कौं देत है छबि सौदा लै जात ॥५२२॥
कोट भानु दुति दिपत है मोहन छिगुरी छोर ।
यातै बरनी ओटहू दृग हेरत वह ओर ॥ ५२३ ॥

(१) छोड़दे । (२) परेख = पछताव ।

लगन बर्नन ।

नैनन की अरु करन की तारी तारी दोइ ।
मीत पूछ यह बात तूं जिहि निरधारी होइ ॥ ५२४ ॥
यह बिचार छबि रस इन्हैं बार बार तूं प्याइ ।
प्यास और तैं सौगुनी लगत घाइलन आइ ॥ ५२५ ॥
इही मतौ ठहराइये अली हमारे जान ।
जान न दीजे कान्ह कौं जान दीजिये जान ॥ ५२६ ॥
रसनिधि जब कबहूं बहै वह पुरवइया बाइ ।
लगी पुरातन चोट जो तब उभरति है आइ ॥५२७॥
जौ कहियै वह बात तौ कहै कौन पतियाइ ।
लागौ सौंहन करन मन मीत सौंह ना आइ॥ ५२८॥
नैन चकोरन ह्वै लखौ जब ससि मुख कौं आइ ।
तब याकी चितचाह कछु तुम कौं जानी जाइ ॥५२९॥
जदपि रसिकनिधि अमित हुव पुन निसि तारे होत ।
ससि बिन लखै चकोर के नहि निसतारे होत ॥५३०॥
ज्यौं तू उत मुर जात है त्यौं गिरबर मुरजाइ ।
तेरी या मुर जान पै मेरो मन मुर जाइ ॥५३१॥
मेरौ सौ होतो अरे तेरौ चित्त अधीर ।
व्यापी होती जो कहूं तोहि बात की पीर ॥ ५३२ ॥

भेजौ सुमन सनेह मैं कछुक पथिक के साथ ।
बाह लगायौ कै नही गात आपनै हाथ ॥ ५३३ ॥
दिवस बितावत ब्रजबधू सुरत ध्यान मैं पूर ।
बदन चन्द लखि विरह तम निस कौ करती दूर ॥ ५३४ ॥
क्यौं बिसराई भावते जिय तैं मेरी याद (१) ।
घुँगरुन मिस बज करत हैं मन मेरौ फिरयाद (२) ॥ ५३५ ॥
सब दरदन कौ ज्यौं दवा जग मैं बिधि कर दीन ।
बेदरदी महबूब की काहे खोइ न दीन ॥ ५३६ ॥
जौं पसु ऊपर ऊपजै दया कसाइ न चित्त ।
तौ दयाल हौ वैसही नेहन ऊपर मित्त ॥ ५३७ ॥
यामै कछु टोटौ परौ (३) कै हम बिडतौ कीन (४) ।
मन पलटे सुन हे सखी लाल मनोहर लीन ॥ ५३८ ॥
सुन वे रसनिधि भावते कहैं जताऊ तोह ।
मजलूमन के जुलम कौ खबादार मत होह ॥ ५३९ ॥
उड़ौ गुडी लौं मन फिरै डोर लाल के हाथ ।
नैन तमासे कौ रहै लगे निरंतर साथ ॥ ५४० ॥
प्रान रहत है देह मैं देह प्रान कौ पाइ ।
आसिक औ महबूब बिच यह कछु भेद दिखाइ ॥ ५४१ ॥

---

(१) स्मृति। (२) शिकायत। (३) घटीपरी। (४) मुनाफा।

निस बासर घन स्याम पै चहै स्वाति छबि बूँद ।
दृगचातिक लखि आन रस रहै चौंच पल मूँद ॥५४२॥
बिन कारज लागौ रहो कारज सम दृग बाल ।
निस बासर मन भावतौ स्यामल रूप रसाल ॥५४३॥
हित बिसात धर मन नरद चलकै देइ न दाव ।
यासौं प्रीतम की रजा बाजू खेलत चाव ॥५४४॥
नगर बसैं न गरै लगै सुनिये नागर नार ।
पगरै रगरै सुमन लै डारै बगर बहार ॥५४५॥
भोर होत पीरी लगी यातै ससिमुख जोत ।
सरसन दरद चकोर की आइ हियै सुधि होत ॥५४६॥
सकै न बिछुरन मीत सह सकै (१) कहति इत आव ।
दुबिध कठिन नेहनि अरे कहु का करै उपाव ॥५४७॥
लगन लाग दुउ एक सम इनमैं अंतर येह ।
वह आसा लीनै रहै यह आसा तज देह ॥५४८॥
सीखे त्यौं अहिबरन (२) ज्यौं काची विद्या जाइ ।
चित्त चकाबू आइ कै तुम पै कढ़ौ न जाइ ॥ ५४९ ॥
जिन नैनन कौ है सही मोहनरूप अहार ।
तिन कौं बैद बतावही लंघन कौ उपचार ॥५५०॥

(१) संकोच करै। (२) अर्जुन के पुत्र।

जसुमति या ब्रज मै कहौ अब निबाह क्यौं होइ ।
तब दधिचोरी होत ही अब चितचोरी होइ ॥ ५५१ ॥
अपनौ सौ इन पै जितौ लाज चलावत जोर ।
कवलनुमा लौं दृग रहै निरख मीतमुख ओर ॥५५२॥
किसलै (१) दल के बान जे घाले अंबुज ईठ ।
अजौं फिरत है अलि लखौ हरद लगाये पीठ ॥५५३॥
परसौं सुनु नँदलाड़ले चरन तिहारे भाल ।
चोर चोर चित लेत हौ जोर जोर दृग लाल ॥५५४॥
नैन लगे वे जाइ कै यह कहनावत आइ ।
दृग मृग त्यौं चित चाह वह लगत मीत सौं जाइ ॥५५५॥
जौ तूं चाहत प्रेमरस याकौ यहै उपाव ।
कर गुरु चातक मीन कौं तब हित मग धर पाव ॥५५६॥
एक कटे एकै पड़े एक कटन कौं त्यार ।
अड़े रहै केते सुमन मीता तेरे द्वार ॥ ५५७ ॥
जो तूं उर लगती कहूं चंद लगन की बान ।
दुबिध कठिन परती गरै चित चकोर कौ आन ॥५५८॥
ससि चकोर दृग आरसी लखि अपनो मुख आइ ।
अनदेखै देखै यहै लगियौ दृगनि सुहाइ ॥५५९॥

(१) नव पल्लव ।

चाहत हैं रबि कौ उदौ हर बिधि बिधहिं मनाइ।
रात परै (१) दिन (२) परत है चकई चकवन आइ॥५६०॥
जाहि लगे तैं तुरतही सिर नाहिं धुनै सुजान।
ना वह रूप न बाल वह ना वह तान न बान॥५६१॥
उदौ करै नहि हिय अवनि जब लगि चाह दिनेस।
तब लग सूझै दृगन क्यौं बिकट पंथ पियदेस॥५६२॥
न्यारे करकै जाचती चात्रिकबन मै बाह।
सब निस मारै बाहि जो धनि तेतौ निरबाह॥५६३॥
लगे न जे दृग लालची जब तैं लखे सुजान।
चित चाइन वारन लगे जान जान पर जान॥५६४॥
कुंदन सी वह बाल कौं हीरा लाल लगाइ।
रतन जटित की दुति तबै लीला दृग सरसाइ॥५६५॥
परहथ परौ छुड़ाइयै जौ कछु गड़ गुथ होइ।
मोहन मन घर वात कौ लै राखौ तुम गोइ॥५६६॥
कहि चकोर क्यौं जीवतो चंद बिना निस पाइ।
चंदमुखी करती नही कहूं निसा न सहाइ॥५६७॥

सोरठा।

निसदिन चाहत तोहि, ज्यौं निधनी धन कौ चहै।
प्रीतम हितकर मोह, दै दौलत दीदार की॥५५८॥

(१) रात भये। (२) दिनपरत = मुसीबत पड़ती है।

दोहा।

मोह तोह मेहदी कहूं कैसै बनै बनाइ।
जिन चरननि सौं मै रची तहां रची तूं जाइ॥ ५६९॥
ज्यों ज्यों वह मनमोहनी सुन्दरता नाहिं लेइ।
त्यों त्यों रसनिधि के मनै संगहि तानै देइ॥ ५७०॥
माखनचोरी सौं अरी परकि रहौ नँदलाल।
चोरन लागौ अब लखौ नेहिन को मन माल॥ ५७१॥
प्रेम लगन कुलकान सौं नेक न आई रासि।
वह चल प्रीतम पै गई वह गुरु लोगन पास॥ ५७२॥
प्रीतम कहि यह बात कौं जानो जात न हेत।
मो दृग तारन कौन बिधि बदन चंद भर देत॥ ५७३॥
जब तें वह सिर पर दये हेरन मैं तह बील।
पल घर मैं बैठत नहीं तब तैं दृग है सील(१)॥ ५७४॥
लगे रहत नँदलाल सौं स्याम रँगीले गात।
रसनिधि तारे दृगन के यातैं स्याम दिखात॥ ५७५॥
दृग सेवक नृपरूप मैं ऐसौ सुनियत हेत।
ये मन हीरा देत हैं वे छबि हीरा देत॥ ५७६॥
मगजी ज्यौं लागी रही सुन्दर दावन साथ।
हाइ भावते की कही मगजी लगी न हाथ॥ ५७७॥

१ मोहर।

लागै सकत सनेह जहँ जानत वहै सरीर ।
सुन्यौ न लोहे लहत कहुँ घाइल दिल की पीर ॥५७८॥
मोहनमुख इन दृगन ने जा दिन लखौ न नेक ।
मति लेखौ वह आव (१) मैं विधु लेखन (२) लै छेक॥५७६॥
तुव आवन हित पावड़े राखे पलन बिछाइ ।
निधरक धर पग दृगन पै बरुनी अनी बचाइ ॥५८०॥
रे तबीब तुम सौं हमैं नैक न ऐहै रास ।
बिरह दरद की है दवा वा स्यामलिया पास ॥५८१॥
आसिक अरु महबूब बिच अन्तर इतौ सुजान ।
इनके दृग अँसुवन भरे वे दृग रूप गुमान ॥५८२॥
देखत क्या औरै नमै लै लै मुख की ओर ।
जानत वा मुखचंद रस मजनू नैन चकोर ॥५८३॥
होता कहूं इलाज सौ जोबन का दिल साद ।
दरदवन्त रहते बनै क्यों मजनू फिरहाद ॥५८४॥
जदपि दीप तैं अमित छबि रविहूं मै सरसाइ ।
कब पतङ्ग तजि दीप कौं वा तन झांकत जाइ ॥५८५॥
जौ कबहीं फेरा करै लै लै स्वातहि बेर ।
कफन चाक मजनू करै उठै गोर तैं फेर ॥५८६॥

१ आवरदा। २ हिसाब।

लैउ न मजनू गोर ढिग कोऊ लैलै नाम ।
दरदवन्त कौ नैक तौ लैन देहु बिसराम ॥ ५८७ ॥
दृग सुखपाल लिये खड़े हाजिर लगन कहार ।
पहुंचायौ मन मंजिल तक तुहिं लै प्रान अधार ॥५८८॥
कौन कला तुव दृग लगी सांची कहि किन देत ।
पवन सरूपी मनहि तूं बांधि मुठी में लेत ॥ ५८९ ॥
जाकौ चित चोरौ गयौ या जिहि लियौ चुराइ ।
मीत नफा कहि को भरी सांची धौं कहि आइ ॥५९०॥
मेरेई उर बैठि कै मीत बिलस इहि आइ ।
छिपि हैं नहि मनिलाल जौं चोर अनत लै जाइ ॥५९१॥
लगे लगन कौ सुख भले अब जाननि ब्रजराइ ।
मो मन के पूरन भये सबै मनोरथ आइ ॥ ५९२ ॥
सुध न रही देखतु रहै कल न लखै बिन तोहि ।
देखै अनदेखै तुहै कठिन दुहूं बिधि मोहि ॥ ५९३ ॥
बड़ौ धरनि आकास तैं लखि हिय लौं ह्वै जाइ ।
दृग तारन के तिलन मैं बसौ सु मोहन आइ ॥५९४॥
तुव मरजी सौ मन लगौ कै बेमरजी आइ ।
बूझ देख दृग आपनन मीता सौंह दिवाइ ॥५९५॥
दुखी इकङ्गी प्रीत सौं चातक मीन पतङ्ग ।
घन जल दीप न जानहीं उनके हित कौ अङ्ग ॥५९६॥

सब निस जाकी चाह मैं जरत रहै ढिग दीप ।
तुरत बुझावत निरदई होत न मीत समीप ॥५९७॥
मन के साटै (१) भावतौ देत पाव नहि पौन ।
और नफा को आसरौ तहां करै कहु कौन ॥ ५९८॥
चङ्ग जो होता बैद की दिये दवा मौताद ।
क्यों नहिं सिर के दरद मैं सिर देता फिरहाद ॥५९९॥
एकै आई वार मन एकै भई तयार ।
गुदरी सी लागी रहै रसनिधि नंददुवार ॥ ६०० ॥
नींद दुहुन के दृगन मैं सकै न पल ठहराइ ।
जो चोरी कौ फिरत है जिहि चित चोरौ जाइ ॥६०१॥
हित मन कौ पहिचानि जौं ससि लखतौ वह ओर ।
चुनते चौंच अँगार लै काहै काज चकोर ॥ ६०२॥
जानत है अेरे लला तूं काहू कौ हाल ।
घाइल कर मृग कौं वधिक जैसो फिरत खुसाल ॥६०३॥
आवत जोगी ह्वां लगे नित फेरी दै जान ।
पल खप्पर भर चहत है लाल रूप कौ दान ॥६०४॥

प्रेम वर्नन—सोरठा ।

दोज ससी ज्यौं प्रेम, राजत स्याम अकास मैं ।
आड़ी भीत जु नैम, ता ऊपर हो देख लै ॥६०५॥

१ बदले ।

दोहा।

उदौ करत जब प्रेम रवि पूरब दिसि तैं आइ।
कहू नैम तम जात है देखौ जात बिलाइ ॥ ६०६ ॥
बांधे जे मन चित्त तैं सरस प्रेम की डोर।
अनख नखन सौं भावते उन्हैं सकै को छोर ॥ ६०७ ॥
चसमन चसमा प्रेम कौ पहिले लेहु लगाइ।
सुन्दर मुख वह मीत कौं तब अवलोकौ आइ ॥ ६०८ ॥
रिझवारे नँदलाल पै मन मेरो न अघाइ।
घर लौं आवत वार कै फिर चल वारन जाइ ॥ ६०९ ॥
राखे हैं हिय सेज मैं चुन कै सुमन बिछाइ।
अरे गुमानी पलक तौ इहां पावँ धर आइ ॥ ६१० ॥
हाथ मलै जौ वह मिलै तौ मलियै सौ बार।
मिलत रसिक परवीन वह मिलियै हित के तार ॥ ६११ ॥
अद्भुत गत यह प्रेम की बैनन कही न जाइ।
दरस भूख लागै दृगन भूखहि देत भगाइ ॥ ६१२ ॥
कहत रहौ कर देहुंगौ प्रेम कीमिया त्यार।
मन धन लैकर क्यों अरे अब मुकरत है यार ॥ ६१३ ॥
राजत है कुन्दन जरी चुनी चुनी ब्रजबाल।
तामह सोभा देत है मधि नाइक नन्दलाल ॥ ६१४ ॥

पथिक आपनै पथ लगौ इहा रहौ न पुसाइ।
रसनिधि नैन सराय मैं बस्यौ भावतौ आइ ॥६१५॥
अकथ कथा यह प्रेम की कही जाइ नहि बैन।
रूपसिन्धु भर लेत है पल प्यालिन मै मैन ॥६१६॥
प्रेम नगर मै दृग बया नोखे प्रगटे आइ।
दो मन कौ कर एक मन भाव देत ठहराइ ॥६१७॥
प्रेमहि राखत सजन हिय होन देत नाहिं नून।
नुकता कौं राखै रहै जैसै हिय मै नून (१) ॥६१८॥
प्रेम नगर मै देत हैं चित चोरन कौं छाड़।
नेह नगर इनमा रजै मन धन लीजे डांड़ ॥६१९॥
प्रेम अहेरी की अरे यह अद्भुत गत हेर।
कीनै दृग मृग मीत के मन चीते पर सेर ॥६२०॥
मतलब मतलब प्यार सौं तन मन दै कर प्रीति।
सुनी सनेहन मुख यहै प्रेम पंथ की रीति ॥६२१॥
बहुत दिना उर मैं भये बिच माया के नेम।
मेहर नजर कर कीजिये मुझै इनायत (२) प्रेम ॥६२२॥
प्रेम पियाला पी छके तेई हैं हुसियार।
जे माया मद सौं भरे ते बूड़े मँझधार ॥६२३॥

---

१ नू फारसी का एक हरफ है जिसके बीच में नुकता अर्थात् बिंदी रहती है। २ इनायत कीजिये, = दीजिये।

हरि बिछुरत बीती जु हिय सो कछु कहत बनै न ।
अकथ कथा यह प्रेम की जिय जानै कै नैन ॥ ६२४ ॥
प्रेम चिन्ह बिन जो हियौ सो यों रसिक हजूर ।
बिना मुहर की सनद ज्यों दफतर नामंजूर ॥ ६२५ ॥
उरझत दृग बंधि जात मन कहौ कौन यह रीत ।
प्रेम नगर मैं आइ कै देखी बड़ी अनीत ॥ ६२६ ॥
भरि आये हौं सुमन ये फूल हियै सरसान ।
हरिआये हैं बन सघन हरि आये बन जान ॥ ६२७ ॥
चाह सलिल मैं परत है गुरुजन भवर अपार ।
केवट यार लगाइहै हित जहाज कौं पार ॥ ६२८ ॥
प्रेम नगर की रीत कछु बैनन कहत बनै न ।
रुजू रहत चितचोर सौं नेहिन के मन नैन ॥ ६२९ ॥
जेतोई मजबूत कै हित बँध बांध्यौ जाइ ।
तेतोई तामैं सरस भरत प्रेम रस आइ ॥ ६३० ॥
प्रेम नगर के कान दै सुनो चरित ये चार ।
जोई चित बित कौ हरै करै वहै हियहार ॥ ६३१ ॥
विहिरी कहु निबहत सुनौं लगर झगर हितबेस ।
बासो पावत बेसरा सही प्रेम के देस ॥ ६३२ ॥

न्यारौ पैंड़ौ (१) प्रेम कौ सहसा धरौ न पाव ।
सिर के पैंड़े भावते चलौ जाय तौ जाव ॥६३३॥
नैम न ढूंढ़े पाइयै जेहि थल बाढ़े प्रेम ।
रहत आइ हरि दरस के प्रेम आसरै नैम ॥६३४॥
या रस कौ रसना श्रवन कहन सुनन के नाहिं ।
सैना सैनी बैन कौ नैना समझ सिहाहिं ॥६३५॥
गोकुल मैं मोकल फिरै गली गली गज प्रेम ।
ऊधौ ह्यां तैं जाव लै तुम अपनौ सब नेम ॥६३६॥
अमल अपूरब प्रेम कौ जब तक लियौ न होइ ।
असुरारी (२) की बात तुहिं असर कौन बिधि होइ॥६३७॥
जब लग रसनिध प्रेम कौं अनुभव होइ न जाइ ।
वासौं कहिये कवन विधि प्रेमकथा समुझाइ ॥६३८॥
आन भमायौ जगत जिहि रसनिध प्रेम कवाल ।
दरसै तिनहीं के दृगन मोहन लाल जमाल ॥६३९॥
रसनिध प्रेम पयोध की अद्भुत सुनौ कथाह ।
है अथाह नेहन यहै असनेहन (३) कौं थाह ॥६४०॥
छूटत जाके नाम तें जड़ चेतन की गांठ ।
तापै छूटत है नहीं सिय(४)कंकन की गांठ ॥६४१॥

---

१ रास्ता । २ श्रीकृष्णचन्द्र । ३ जिस को सनेह न हो । ४ जानकी ।

प्रीतिबर्नन ।

मन मैं बस कर भावते कहौ कौन यह हेत ।
प्रगट दृगन कौं आइकै क्यों न दिखाई देत ॥ ६४२ ॥
केसी कंस सको नही जासौं जोर चलाइ ।
तापर अबला सहजही मुरली लेत छिनाइ ॥ ६४३ ॥
हिय दरपन कौं देख जब पारी (१) प्रीत लगाइ ।
तब वा महँ नँदलाल कौ सुन्दरमुख दरसाइ ॥ ६४४ ॥
दीप ओर की बात तौ है दीपक के सङ्ग ।
प्रीत आपनी ओर तैं देत निबाह पतङ्ग ॥ ६४५ ॥
प्रीत अमृत फल जे लगे मन दृग सुरभित पाइ ।
मीता इनकौं नैक तूं लखि बहार तौ आइ ॥ ६४६ ॥
ज्यौं अनहित कौं चहत है त्यौंही हित कौ चाह ।
हित अनहित मै क्या मजा मीत देखि अवगाह ॥ ६४७ ॥
घर घर उनहीं के जुरे बदनामी के तोत ।
भाजत जे हित खेत तैं नेकनाम कब होत ॥ ६४८ ॥
उर अकास जहँ आइ के हित ससि कियौ उदोत ।
प्रीत जुन्हैया (२) कौं तहां कहु दुराव कहँ होत ॥ ६४९ ॥
रसनिधि नेहिनमुख सुनी हम यह बात पुनीत ।
हित मगजी दै चाहिये नितही मगजी मीत ॥ ६५ ॥

१ पारा । २ चांदनी ।

मेहर लखौ बे मेहर में बेपारै है बीच ।
दूर कियौ वे बीच तें प्रीतम सदा नगीच ॥ ६५१ ॥
डीठ डोर नैना दही छिरक रूपरस तोइ ।
मथ मो घट प्रीतम लियौ मन नवनीत विलोइ ॥ ६५२ ॥
रसनिधि यह नैनन लखौ नवल प्रीत के रङ्ग ।
रूप रोसनी दीप मुख नेह लग्यौ मो अङ्ग ॥ ६५३ ॥
मीत बात तहकीक कर यह अतरन (१) में होइ ।
तन छूटेही सुमन तें जात नहीं हित खोइ ॥ ६५४ ॥
तौ तुम मेरे पलन तैं पलक न होते ओट ।
व्यापी होती जो तुमैं ओट भये की चोट ॥ ६५५ ॥
इहि बिधि भावंता बसौ हिल मिल नैनन माहिं ।
खैंचत दृग पर जात है मन कर प्रीतम बाहिं ॥ ६५६ ॥
जा काहू कौ देत प्रभु तैं लगाइ कै हेत ।
फिर तिहि पलकन ओट पल कहु काहे कर देत ॥ ६५७ ॥
वह पीतांबर की पवन जब तक लगै न आइ ।
सुमन कली अनुराग की तब तक क्यों बिगसाइ ॥ ६५८ ॥
कहत पीपलौ पीपलौ नितहि चैपला (२) आइ ।
मीत खूब यह अरथ कौ समझ लेहु चित लाइ ॥ ६५९ ॥

---

१ अतर की जमा । २ चैपला एक पच्छी का नाम है वह जेठ आसाढ़ के दिनौ मे जंगल मे पीपलौं पीपलौं बोलता है ।

मोहन ! रस ना आवतौ नैक सरद को रास ।
होतो कहुं वृषभान की जो न राधिका पास ॥ ६६० ॥
दरजी या हित थान कौ कतरन लेहु चुराय ।
प्रीत व्यौंत मैं भावते बड़ो फेर पर जाय ॥ ६६१ ॥
सांचो है यह भावते भय बिन प्रीत न होइ ।
बिदित प्रीत भय तै लखौ तनदुति पीरी होइ ॥ ६६२ ॥
जबही मोतन पै करै आइ काम (१) री वार (२) ।
तबही लेत बचाइ कै आइ कामरीवार ॥ ६६३ ॥
अद्भुत गत यह प्रेम की लखौ सनेही आइ ।
जुरै कहूं टूटै कहूं कहूं गांठ परि जाइ ॥ ६६४ ॥
प्रीत तार अरु तार मैं राग जोत ठहराइ ।
लै छूटै करतार तौ फिर कुतार ह्वै जाइ ॥ ६६५ ॥
देखत तेरे लेत है तन प्रसेद सौ बोर ।
यामैं तेरी खोर कछु या कुछ मोरी खोर ॥ ६६६ ॥
प्रीत प्रीत हटतार तें नेह जु सरसै आइ ।
हिय तामे कौं रसिकनिधि बेधै तुरतही जाइ ॥ ६६७ ॥
औरन के हित तार कौं कढ़ि आवत है छोर ।
सुनियत सारस प्रीत इक जग मैं निबही वोर ॥ ६६८ ॥

१ कामदेव । २ चोट ।

अरे रसिकनिधि भावते धरौ जितै तूं पाइ ।
तिहि मगमै मो दृगन कौं लीजे पहिल बिछाइ ॥६६९॥
हिय सीसा [१] मध हित अतर जितौ राखिये बन्द ।
खसबोई [२] वाकी तिती रसनिध रहै सुछन्द ॥६७०॥
ऐसी गति कछु प्यार की सुनिये जानी यार ।
मन तुव तावे [३] रहत है ज्यौं कर तावे तार [४] ॥६७१॥
बिटते को सौंप्यो हतौ मै तेरे कर हाल ।
द्वै मन कौं तौ एक मन कर दीनौ नँदलाल ॥ ६७२ ॥
यह अचरज लख मैं हियौ कछु बिहँसी अनखाइ ।
चार दृगन मै दुहुन कौं मूरत चार दिखाइ ॥ ६७३ ॥
प्रीतम चसमा प्रीत कौं टुक तौ देख लगाइ ।
दिये पीत चसमा दृगन चहुदिस पीत दिखाइ ॥६७४॥
रँगौ गयौ मन पट अरी स्यामलिया के रंग ।
कारी कामर पैं चढ़ै अब क्यौं दूजौ रङ्ग ॥ ६७५ ॥
ह्यां लग रसनिधि प्रीति कौ चटकीलौ रँग आइ ।
मन पट जासौ रँगतहीं आभा दृग दरसाइ ॥ ६७६ ॥
और चोट बच जात है कछुक पाइ कै ओट ।
पलक ओट प्रीतम भये लागत दूनी चोट ॥ ६७७ ॥

---

१ बीच । २ खुश्बू । ३ आधीन । ४ जैसे हाथ के आधीन तार ।

बड़ी बेर कौ जो खड़ौ दुखित रावरे पाइ (१) ।
रसनिधि हिय के तखत पै बैठ भावते आइ ॥ ६७८ ॥
रे नेही मत डगमगै बांध प्रीति सिरनेत (२) ।
सहु वे सरस कटाछ सर रहु साबित हित खेत ॥ ६७९ ॥
मेरेई अनुराग मैं कछु इक खोट दिखाइ ।
जातैं मन पट लाल कौ हो न रँगीलो जाइ ॥ ६८० ॥
चसमन तैं तुम रीत वह चसमन लेहु सिखाइ ।
बिन चसमन अनुराग के चहुं दिस लाल दिखाइ ॥ ६८१ ॥
दुरखी आवत काम ज्यों तापर एक कमान ।
दुरखी वरखी जात है प्रीतम प्रीति निदान ॥ ६८२ ॥

नेह वर्णन ।

नेहिन के मन कांच से अधिक कनकनै आइ ।
दृग ठोकर के लगतही टूक टूक होइ जाइ ॥ ६८३ ॥
जा सनेह सौं ब्रजबधू मिली जाइ घनस्याम ।
ता सनेह कौं करत हौं बार बार परनाम ॥ ६८४ ॥
सपनैहू आये न जे हित गलियन मझियाइ ।
तिन सौं दिल को दरद कहि मत दे भरम गमाइ ॥ ६८५ ॥
नेह लगे सैये बदन चिकनै सरस दिखाइ ।
नेह लगाये भावतो क्यों रूखो होइ जाइ ॥ ६८६ ॥

१ पैर—पांव । २ निशान कलगी ।

सरस सुमन सौं बास कै तिल समान सौं पेर ।
कीन्हौ नेह तयार जहँ मीत रुखाई हेर ॥ ६८७ ॥
असनेही (१) जानैं कहा नेही मन अनुराग ।
कहुं हंसन की चाल कौं चल जानत है काग ॥६८८॥
तिल तावे है भावते नेह त्याग पिर जात ।
पेरेहू छोड़ै नही नेही नेही गात ॥६८९॥
तेरे नट पट नैन ये कछू न जानै जात ।
जाही तन मैं तूं बसत तेही पेरे जात ॥ ६९० ॥
जारत दीप पतंग कौं या आसा सौं आइ ।
लेत सनेही जान कै यातैं जोत मिलाइ ॥ ६९१ ॥
जैसै दुवि अच्छर मिलै नाम कहावत नेह ।
जुगल किसोरी परसपर यह बिधि सुनौ सनेह ॥६९२॥
हेरत नैक न सामुहै मुख मोरै री जात ।
चित चोरेई जात हित जोरेई चित जात ॥ ६९३ ॥
और लतन सौं हित लता अद्भुद गति सरसाइ ।
सुमन लगै पाहिलै इहै पाछे कै हरियाइ ॥ ६९४ ॥
बिधि पाड़ै बहु जतन सौं बहुतन मैं तो टोइ (२) ।
हित पाटी मै लिख दये नेहि आंक देव मोइ ॥ ६९५ ॥

१ जिसके सनेह नही। २ टोइनाम चुनकर के तलास करके।

नेह मोइ रसि रेसमाहिं गांठ दई हित जोर ।
चाहत हैं गुरुजन तिन्हैं अनख नखन सौं छोर ॥६९६॥
हित बतियन[1] की रसिकनिधि लखि अद्भुत गति एह ।
प्रीतम मुख पर जोत है मेरे हिय मै नेह[2] ॥६९७॥
स्वच्छ सुतिय तन भूमि लहि जहँ पानिप सरसाइ ।
मन माली दीनी तहां हित की लता लगाइ ॥६९८॥
नेह लता उर भूमि भये जो यह दो दो पात ।
सुमन सहित अनुराग फल तासौं लागत जात ॥६९९॥
या झीनै हित तार मैं बल एतो अधिकाइ ।
अखिल लोक को ईस जो जासौ बांधौ जाइ ॥७००॥
नेही लोहा नूर लखि कटत कटाछन माह ।
असनेही हित खेत तजि भागत लोहे जाह ॥७०१॥
नेहिन के मन भावते बिरह आंच सो ताइ ।
कुंदन सौं कर लेत है रूप कसौटी लाइ ॥७०२॥
नेह नगर मै हित बया यह कर दीनौ भाव ।
मन के साटै मिलत जहँ भाव तरजुवा पाव ॥७०३॥
नेह अतर की चिकनई जेहि दृग परसी जाइ ।
झलकत जलकन की रहै बिच नहि पलकन आइ ॥७०४॥

---

1 बाती । 2 तेल ।

या घट के सौ टूक कर दीजे नदी बहाइ ।
नेह भरेहू पै जिन्हैं दौर रुखाई जाइ ॥ ७०५ ॥
रूखे रूखे जे रहत नेह बास नहिं लेंइ ।
उन तैं वे मखियां (१) भली नेह परसि जिय देंइ ॥ ७०६ ॥
हितराजी मैं राखबी चित राजी की बात ।
इतराजी कर कहुं सुनै प्रीतम नेहनिभात (२) ॥ ७०७ ॥
यामैं कछु धोखौ नहीं नेही सूर समान ।
दोऊ सनमुख सहत हैं दृग अनियारे बान ॥ ७०८ ॥
कहिबे कौ कोऊ कहौ बातन के बिस्तार ।
सुरझाये कहु कौन नै वर उरझे हित तार ॥ ७०९ ॥
प्रीतमही तैं नेह कौ होन न दीजे छीन ।
नेह घटैही लगत है दीपक जोत मलीन ॥ ७१० ॥
मृदु बिहँसन मुसक्यान मैं कर नेही दृग बंद (३) ।
काहे कौ खोलत अरे तैं ये जुलफन फंद ॥ ७११ ॥
बिधिहूं ते जे अधिक है नेह सु मेरे जान ।
मीत दरस कौं देत कर नैनमई तन प्रान ॥ ७१२ ॥
मन माली हिय भूमि मैं बोवे हित कौ बाग ।
मोहन आन निहारियै लागौ फल अनुराग ॥ ७१३ ॥

---

१ माखी = माखी तेल (नेह) मे पड़तेही मरजाती है।
२ निभेत। ३ नगर बंद।

सोरठा ।

गिर तें गरुऔ नेह, असनेहिन हरुऔ लगै ।
व्यापत नहिं वह देह, अवनि (१) भार जस बासुकाहिं (२) ॥

दोहा ।

बिन दामन सौं दाम लै सुनी न अब तक बात ।
बिन दामन हित हाट मैं नेही सहज बिकात ॥७१५॥
उतै रुखाई है घनी थोरो मुझ पै नेह ।
जाही अंग लगाइयै सोई सोखै लेह ॥ ७१६ ॥
बार बार ब्रजबाल कौं यह बिध हियौ डराइ ।
नेह लगै मोहन दसा मत हमसी (३) होइ जाइ ॥७१७॥
रूप चिराक (४) चिराक की गत एकैई जान ।
दुऔ नेह सौं करत हैं प्रगट रोसनी आन ॥७१८॥
सुंदर पलकन पै लसै ये निस तारे आइ ।
रसनिधि नेही दिलन के ये दृग तारे आइ ॥ ७१९ ॥
व्यङ्ग बचन तें कढ़त है जौ कोई धुन आइ ।
ताहि समझ नेही हियौ बार बार अकुलाइ ॥ ७२० ॥
मांगत बिधि सौं ब्रजबधू प्रन (५) पत कर बड़ येह ।
हम सौं मोहन नेह कै हम सौं करै न नेह ॥ ७२१ ॥

---

१ पृथिवी । २ शेषनाग । ३ हमारी ऐसी ।
४ चिराग । ५ दंडोत ।

धनि (१) दृग तारन के जु तिल जिन मैं स्याम सनेह ।
बिना नेह के तिल किते परे रहत हैं देह ॥ ७२२ ॥
चित इक हित बहु सजन यह कर देखो हिय गौर ।
धरी जात कहु कौन विध एक वस्तु छै ठौर ॥७२३॥
हित लालहिं लै हिय डबा जेतौ धरौ दुराइ ।
होत जोत वाकी प्रगट तऊ दृगन मैं जाइ ॥ ७२४ ॥
श्रवन सुनौ है यह नयौ नेह नगर मैं भाव ।
देत न तहँ मन भावतौ मन के साटै पाव ॥७२५॥
नेह नगर में रीत यह लखौ अनोखी वाहु ।
रसनिधि चित के चोरहू बिदित कहावत साहु॥७२६॥
मन बिकगौ हित हाट मैं नन्दनदन के पान (२) ।
ऐसौ समयौ जुरत है परम भाग तैं आन ॥७२७॥
चितबित नेहिन के जहां निबहन पावत नाहिं ।
असनेही निरभै फिरै मन नग लादे जाहिं ॥७२८॥
हरुवौ (३) हरुवौ धरन पै धरियै प्रीतम पाइ ।
सुमन सनेहिन के बिछे मत कहुँ बिछलै जाइ॥७२९॥
दरद दवा दोनौं रहै प्रीतम पास तयार ।
नेहनि कौ निरबाहवौ वाही के अखत्यार ॥ ७३० ॥

१ नेत्रों के तारे धन्य हैं जिन में स्याम का सनेह है और ऐसे तो बिना नेह के तिल देह मे बहुत रहते हैं। २ हाथ। ३ हलके।

दरदहि दै जानत लला सुध लै जानत नाहिं ।
कहो बिचारे नेहिया तुव घाले कित जाहिं ॥ ७३१ ॥
अद्भुत बात सनेह की सुनौ सनेही आइ ।
जाकी सुध आवै हियै सबई सुध बुध जाइ ॥ ७३२ ॥
कहनावत यह मै सुनीं पोषत तन कौं नेह(१) ।
नेह(२)लगायै अब लगी सूखन सिगरी देह ॥ ७३३ ॥
और जवाहिर की प्रभा जहीं धरौ तहँ होत ।
हित मानिक की जगत मैं सरस प्रकाशित जोत ॥ ७३४ ॥
रूखी राखहि कहत सब मोह अचम्भौ येह ।
पटहू केवर लाग बहु खैंच नेह कौं लेह ॥ ७३५ ॥
बोलन चितवन चलन मैं सहज जनाई देत ।
छिपत चतुरई कर कहूं अरे हिये कौं हेत ॥ ७३६ ॥
बांध अरे हित यार कौं पहिलै मुहकम आइ ।
तब गहिरौ होकै इहां नेह नीर ठहराइ ॥ ७३७ ॥
मीता तूं चाहत कियौ रूखी बतियन जोत ।
नेह बिनाही रोसनी देखी सुनी न होत ॥ ७३८ ॥
नेहिन पै मनभावते माति तैं रूखो होइ ।
राख रुखाई देयगी नेह चिकनई खोइ ॥ ७३९ ॥

---

१ तेल। २ सनेह।

तूं इनसौं नित व्याज की कथा चलावत आइ ।
नेहिन तौं मनधन दियौ तुहि निरव्याजौं ल्याइ ॥७४०॥
नेह ललक वन सौं भयै हित सौं झीनौ तार ।
मन गयन्द तासौं बँधौ झूमत प्रीतम द्वार ॥७४१॥
आप बसातै सज्जना नेहन दीजे जान ।
नेही तिल नेहैं तजे खरि(१)हो जात निदान॥ ७४२ ॥

अथ कृतभाव ।

रूपसिन्धु मथि स्याम दृग मोहन बनक बनाइ ।
दीनौं नेहिन बिरह बिष छबि मद असुरन प्याइ ॥७४३॥
तुम गिरि लै नख पै धर्‍यौ इन तुमकौं दृग कोर ।
दो मैं तै तुमही कहौ अधिक कियौ केहि जोर॥७४४॥
तानि मुख तौं चहियत हतौ हरबिध बिधहि मनाइ ।
भली भई जो सखि भयौ मोहन मथुरै जाइ ॥७४५॥
बारक तुम गिर कर धरौ गिरधर पायो नाम ।
सदा रहौं तुम्ह उर धरै उनकौं अवला नाम ॥७४६॥
पोर पोर तन आपनौं अनत बिधायौ जाइ ।
तब मुरली नँदलाल पै भई सुहागिन आइ ॥७४७॥
तेरे घर बिधि कौं दयौ दयौ न कोऊ खात ।
गोरस हित घर घर लला काहे फिरत ललात ॥७४८॥

१ खल = खली, निर्दई ।

घट बढ़ इन मैं कौन हैं तुहीं सामरे ऐन ।
तुम गिरि लै नख पै धर्‍यौ इन गिरधर लै नैन ॥७४९॥
जान अजान न होत है जगत बिदित यह बात ।
बेर हमारी जान कै क्यों अजान होइ जात ॥७५०॥
नंदलाल सँग लग गये बुध बिचार बर ज्ञान ।
अब उपदेसनि जोग ब्रज आयौ कौन सयान ॥७५१॥
यह अब कौन कलानिधी कहौ कलानिधि आप ।
होइ सुधाकर करत हौ बिरहिनि तन संताप ॥७५२॥
इनसौं घट भर लीजियै यामैं नहीं बिबाद ।
जान सकै रसकूप कौं रसना कहा सवाद ॥ ७५३ ॥
कै राखौ कर मैं छला कै मन कौ ब्रजनाथ ।
एक हाथ मैं ये दोऊ कैसे रहिहै साथ ॥ ७५४ ॥
सुमिरत जग के चरन कौं मोह जगत के जाहि ।
निरमोही जो होइ वह कौन आचरज आहि ॥७५५॥
मोहन तेरे नाम कौ कहौ वा दिना छोर ।
ब्रजबासिन को मोह कै चलौ मधुपुरी ओर ॥ ७५६ ॥
जो चकोर सम आवतौ लखि तुहि सरसिजमाल(१) ।
होतौ विदित चकोर तिम सासि तेरौई हाल ॥७५७॥

---

१ (फारसी) खूबसूरती ।

यामैं कछु धोखौ नहीं सुनौ सन्त अभिराम ।
नेह चिकनई खोइवो है खलिही(१)को काम ॥ ७५८ ॥
आप लसत बैचत मनहि रसनिधि कर बिन दाम ।
नैनन मै नै नाहियै यातै नैना नाम ॥ ७५९ ॥
कहा भयो तोकौं दयौ बिधि जो सरिसज माल ।
तौ हेरत हर हौ लला काहू कौ मन लाल ॥ ७६० ॥
बचो रहौ चित चोट तैं मेरे मोहन लाल ।
चोट लगै हुइ जाइगौ मेरोई सौ हाल ॥ ७६१ ॥
अँधियारी निस कौ जनम कारे कान्ह गुवाल ।
चितचोरी जो करत हौ कहा अचंभौ लाल ॥७६२॥
सुध लै जानत हौ कछू कै भौहैंई तान ।
यही बूझ पै आप तुम बड़े कहावत जांन ॥ ७६३ ॥
जिन मोहन नै सहज में नख पर धरौ पहार ।
भारी कैसे कै लगै तिनहि बिरह कौ भार ॥ ७६४ ॥
गिरधर लियो छिपाइ कै तन तिनका की वोट ।
और कहा कछु कलन की अली बांधियत मोट ॥७६५॥
होत सनेही कौ तहां कहु कैसै निरबाह ।
चित बित हर दृग रावरे जहां कहावत साह ॥७६६॥

१ खली, जो तेल निकलने के बाद सीठी बच जाती है, खल = दुष्ट ।

तीन पैर जाके लखौ त्रिभुवन मैं न समाहिं ।
धन राधे राखत तिन्हैं लोइन कोइन माहिं ॥ ७६७ ॥
इंद्रगरब हर सहज मैं गिर नख पर धर लीन ।
इह इतना बितना भरा(१) कहु कितना बल कीन ॥ ७६८ ॥
गोपी जो तुहिं प्रेम करि करतीं नहीं सनाथ ।
को कहतौ तुहिं नंदसुत जग मैं गोपीनाथ ॥ ७६९ ॥
जदपि भयौ है ससि अरे मनही तै उतपन्न ।
तऊ चकोरन मन बिथा नीकौ जानत धन्न ॥ ७७० ॥
जौ नहिं होतौ जगत मै मोंसौं कुटिल निकाम ।
तो क्यों होतो प्रगट तुव अधमउधारन नाम ॥ ७७१ ॥
जो प्रभु तुम हौ भक्तपति पतितन कौ पति कौन ।
तुमही देहु बताइ मुहिं भजौं जाइ हौं तौन ॥ ७७२ ॥
अधमउधारन नाम कौं फिर कै धरो सुधार ।
कै प्रभुजू या अधम कौ हर बिध देहु उधार ॥ ७७३ ॥
लखि यह बिष धर सांवरहि अचरज लागत मोह ।
अमी बृष्टि तन होत है जाहि दृष्टि सौं जोह ॥ ७७४ ॥
यह बिध नै तोही दई अजब करामत (२) हाथ ।
रबि तरवन राखै रहै तैं निज मुख ससि साथ ॥ ७७५ ॥

१ छोटासा । २ यह करामात है कि रवि (सूर्य) वा सस (चन्द्रमा) को साथ रखती है—एड़ी को सूर्य और मुख को चन्द्रमा करार दिया है ।

रसनिधि कारे कान्ह ये रहे मधुपुरी छाय ।
विष उगलत ऊधौ फिरै अचरज लखि यह आय ॥१७६॥
रसनिधि मोहन नाम कौं अरथ न लिय निरधार ।
प्रथम समझ तव कीजतौ वासौं प्रीत विचार ॥१७७॥
हियै नगर वा लगत है लगत न गरुवै आइ ।
येते पर सबही कहैं तोह नगरुवा आइ ॥ १७८ ॥

बिरह बर्नन ।

जबही जड़ हुइ जात है मिलत बात लग सीत ।
तब हित पावन लगत है बिरह आंच सो मीत ॥१७९॥
बड़ी बिरह की रैन यह क्यौंहू कै न विहाइ ।
मीत सुमुख दरसाइ कै इहां सुदिन कर आइ ॥१८०॥
कहो नैक समुझाइ मुहिं सुरजन प्रीतम आप ।
बस मन मैं मन कौ हरौ क्यौं न बिरह संताप॥१८१॥
गोबरधन नख धर लियौ गोपी ग्वाल बचाइ ।
अब गिरधर यह बिरह सिर क्यौं न उठावत आइ॥१८२॥
मोहिं जिवायौ चहत जौ तौ यह फेर कहाइ ।
सखी कहानी कान्ह की कानन सुनी सिहाइ ॥ १८३ ॥
जौ न मिलैंगे स्याम घन वाहि तुरतही आइ ।
बिरह अगिन सौं राधिका दैहै ब्रजहि जराइ ॥ १८४ ॥

छिन भर बिन प्रीतम लखै नैना भर भहरात ।
धीरज पारद कहुँ सुनौ बिरह आंच ठहरात ॥ ७८५ ॥
बिरहअग्नि सुन सुन लगै जब जब उर मै आन ।
तब तब नैन बुझावहीं बरस सरस अंसुवान ॥७८६॥
आपुन तौ ह्वै भावते सोहत हौ सुख सेज ।
मो तन त्रासत रहत हौ बिरह पियादौ भेज ॥७८७॥
प्रीतम अपनी बाह ज्यों निपट निकट दरसाइ ।
पै टिहुनी पर्वत भई मुहि तक सकै न आइ ॥७८८॥
रे तबीब उठ जाइ घर मत निकास गुन पोत ।
बिरहजरे दीनै जरी (१) कैसे चङ्गे होत ॥ ७८९ ॥
यह बूझन कौ नैन ये लग लग कांनन जात ।
काहू के मुख तुम सुनी पिय आवन की बात ॥७९०॥
आसिक बिछुरन दरद कौ सकतौ नहीं अँगेज ।
जोऽब दिलासा की दवा मीत न देतौ भेज ॥७९१॥
सुध आवै जब मीत की घन जिमि बरसत नैन ।
थकित रहै वाही पथिक जिमह सांच मुख चैन ॥७९२॥
ग्रीषम बासर बिरह के लगे जैनावन जोर ।
आइ इतै बरसाइये रस घनस्याम किसोर ॥ ७९३ ॥

१ जड़ी बूटी ।

राखत अँसुवन जलभरे पलकन आठौ जाम ।
तलफत जद्यपि सुमीन दृग विना लखै घनस्याम ॥७९४॥
मन धन हुतौ विसांत जो सो तोहिं दियौ बताइ ।
बाकी बाकी बिरह की प्रीतम भरी न जाइ ॥७९५॥
गुन खोवत ह्या आपनौ रे तबीब बेकाज ।
नैन जहमतिन कौं लगै मोहनरूप इलाज ॥ ७९६ ॥
बिन दरसन सरसन लगौ बिरह तरिन तन जोर ।
आइ स्यामघन बरसिये मेह नेह यह ओर ॥७९७॥

सोरठा ।

प्रीतम प्रान अधार, निसदिन हिय मैं बसत हौ ।
बिरह अग्नि उपचार, जारत हौ जानत कछू ॥७९८॥

दोहा ।

बिरह सिन्धु अवगाहि मन लग्यौ करार (१) करार (२) ।
प्रीतम अजौ उबार लै कर गहि बांह पसार ॥७९९॥
ग्रासत चित्त गयंद कौं बिरह ग्राह जब आइ ।
हरि प्यारे मन कमल लै नेही देत छुड़ाइ ॥८००॥
जब लग कांचे घट पके बिरह अग्नि मैं नाहिं ।
नेह नीर उनमैं अरे भरे कौन बिधि जाहिं ॥८०१॥

१ करार वादा । २ करार किनारा ।

घट जाती संजोग मैं तब न कियौ मैं घैर (१) ।
भावन्ता बिन निस अरी क्यों बढ़ि करती बैर ॥८०२॥
दरस मूर देतो नहीं जौलौं मीत चुकाइ ।
बिरह व्याज वाकौ अरे नितहू बाढ़त जाइ ॥८०३॥
यहि डर सो हौं डरपि कै सकौं न नेह लगाइ ।
मत वह परसै तन बढ़ै बिरह अनल झहराइ ॥८०४॥
रही न तन की सुध वहै कहत बुलाये आइ ।
यह औसर है वाहि अब मीत आइबौ आइ ॥८०५॥
बेग आइ कै मीत अब कर हिसाब यह साफ ।
मेहर नजर कै बिरह की बाकी कर दै माफ ॥८०६॥
जौ कहुं प्रीति बिसाहनी (२) करतौ मन नाहिं जाइ।
काहे कौ कर (३) मांगतौ बिरह जगाती आइ ॥८०७॥
कंचन से तन मैं इहां भरौ सुहाग बनाइ ।
बिरह आंच वापै कहौ सही कौन बिधि जाइ ॥८०८॥
कियौ समुद मुनि (४) पान जो सो भरतौ क्यों ऐन।
करते जो न सहाइ जा पानी कर तुव नैन ॥ ८०९ ॥
अरे कलानिधि निरदई कहा नधी यह आइ ।
पोखत अम्मृत कलन जग बिरहिन देत जराइ ॥८१०॥

१ गिल्ला शिकायत। २ खरीद सौदा। ३ जगात महसूल। ४ अगस्तमुनि।

पोर पोर पेरत तनहि बिरहा दै दै ताइ।
दृग प्यासन कौं रूपरस प्यारे प्या रे आइ॥ ८११॥

का गद (१) कागद मैं अरे सहै बिरह की बात।
मस मिस लिखत निअङ्क ते हियै पार होइ जात॥ ८१२॥

तीछन बान जो बिरह कौ तान (२) दियौ तन माह।
सज्जन चुम्बक (३) उर बसै तातैं निकसत नाह॥ ८१३॥

रहे जु कान्ह सुहाग सँग जे सुबरन से गात।
बिरह घाम की आंच सौं ते कैसै ठहरात॥ ८१४॥

मिल कर तब सुख देत है मोहन प्यारे ईस।
बिछुर चलावन अब लगे बिरह आर कस (४) सीस॥ ८१५॥

हित आचारज दृग सुवन नेह सुघट भरलते।
बिरह अगिन मै मैन द्विज मन की आहुति देत॥ ८१६॥

रसनिधि पलभर होतही भावंता पल ओट।
नही सम्हारी जात है यह अनचाही चोट॥ ८१७॥

बात (५) बात मो दरद की पहुँचावै तुव कान।
यहि आसा घट मै रहैं, ये अनुरागी प्रांन॥ ८१८॥

जे अखियां (६) बैराइहीं लगै बिरह की बाइ।
प्रीतम पगरज कौ तिन्है आँजन देहु लगाइ॥ ८१९॥

---

१ कहां की मोटाई कागद मैं है। २ घालदियो। ३ चुम्बकपत्थर। ४ आराजिससे लकड़ी चीरी जाती है। ५ पवन हवा। ६ जब आई हुई आंख हवा लगाने से बिगड़जाती है और दरद करने लगती है उसको बैराना कहते हैं।

निकसत नाहीं जतन कर रही करेजे साल ।
चुम्बक मीत मिले बिना बिरह साल की भाल॥ ८२० ॥
रे निरमोही मनहरन आरे आरे आइ ।
मारे मारे बिरह के मत मो सीस चलाइ ॥ ८२१ ॥
कहियौ पथिक सँदेस यह मनमोहन सौं टेर ।
बिरह बिथा जो तुम हरी हरी भइ ब्रज फेर ॥ ८२२ ॥
पल अँजुरिन सौं पियत दृग जल अँसुवा भर सास ।
गनत रहत हैं अवधि के दिन पखवारे मास ॥ ८२३ ॥
पलक पानि [१] कुस बरुनिका जल अँसुवा दुज मैन ।
पियहि चलत सुख नीद कौं करत संकलप नैन ॥ ८२४ ॥
जिहि ब्राह्मन पियगमन कौ सगुन दियौ ठहराइ ।
सजनी ताहि बुलाइ दै प्रानदान लै जाइ ॥ ८२५ ॥
अरी नींद आवै चहै जिहि दृग बसत सुजान ।
देखी सुनी धरी कहूं दो असि [२] एक मयान ॥ ८२६ ॥
मन के संग जु नैन चलि देख आवते तोहि ।
तौ काहे कौ बिरह यह नित दुख देतौ मोहि ॥ ८२७ ॥
अबे इसक के दरद कौ मरम न सकिहै पाइ ।
जा तबीब [३] घर आपनै मत तूं भरम गमाइ ॥ ८२८ ॥

---

१ हाथ । २ तरवार । ३ बैद हकीम ।

एक दिना मैं एक पल सकै न पल भर देख ।
बिरह पीर कौ भावतौ कैसै होइ बिसेख ॥ ८२९ ॥
बिरह झार तन भसम भौ अवधि पात भये जोग ।
इहै जान पठयौ इहां हमै जोग लिख जोग ॥ ८३० ॥
अबलौं यह तन राखियौ अवध आस कौं जोर ।
अब जीवौ दुरलभ भयौ गरजत घन चहुंओर ॥ ८३१ ॥
सुन पयान घनस्याम कौ जोग अराध्यौ बाल ।
नैन मेखला मैं मनौ गूंथत डोरे लाल ॥ ८३२ ॥
सासन (१) चाहत सांस अब अवधि आस गइ बीत ।
कै आइस कै आइबौ जौ राखत पत प्रीत ॥ ८३३ ॥
जा दिन तै पियगमन किय बिरह पौर (२) प्रतिहार (३) ।
नींद भूख रोक्यौ हरष कियौ आप अधिकार ॥ ८३४ ॥
बिरहिन पै आयौ मनौ मैन दैन तरवाह ।
जुगनू नाहीं जामुगी सिलगत व्याहमि व्याह ॥ ८३५ ॥
प्रीतम बीतन बिरह की बिन तिय जानत नाहि ।
या अन भइ कौ सो लहै उपजै ताही माहि ॥ ८३६ ॥
जीवै लैवा जोत कौ दोऊ देहु मिलाइ ।
ऊधौ जोग बियोग मै अंतर कह ठहराइ ॥ ८३७ ॥

१ आज्ञा । २ फाटक । ३ द्वारपाल ।

सोरठा ।

प्रगट मिलौ तौ एक, बिछुरै समता द्वै रहै ।
साजन करौ बिबेक, भलौ सँजोग बियोग कै ॥८३८॥

दोहा ।

आपहि यह इनसाफ कौ कीजे प्रान अधार ।
बिरह भार सहि सकत कहुँ हित के झीनै तार ॥८३९॥
अग्निहोतरी नैन ये मीत दरस के हेत ।
बिरह अग्नि हिय कुंड मै निसदिन आहुति देत ॥८४०॥
बिरह तबन (१) तन अति बड़ी बरसु स्यामघन आइ ।
सीतलता सरसै हियै दरद गरद (२) दबि जाइ ॥८४१॥
दैन लगे मन मृगहिं जब बिरहि अहेरी पास ।
जाइ लेत है दौर जब प्रीतम सुवन मवास ॥ ८४२ ॥
बिरह समुद बाढ़ौ अरे यह गरुआ तक आइ ।
इह बिरियां ऐसे समै तूं गरुआ लग जाइ ॥ ८४३ ॥

ध्यानबर्णन ।

रसनिधि बिन प्रीतम लखे क्यों ये लहते चैन ।
ध्यान जखीरा जो जमा कर नहि धरते नैन ॥ ८४४ ॥
बिरह बैर आसा गढ़ी छिके प्रान रनसूर ।
भर राखै दृग ध्यान जल रूप जखीरा पूर ॥८४५॥

---

१ तपन । २ धूर ।

सोरठा ।

रहते कौन अधार, दुसह दुर्ग पिय बिरह भौ ।
कर न राखते त्यार, ध्यान जखीरा नैन जौं ॥८४६॥

दोहा ।

हरि बिछुरत रहते नहीं बिरहिन के तन प्रान ।
अमृत रूप लहते नहीं जौं मनमोहन ध्यान ॥८४७॥
कर गहि ध्यान मलाह तूं करतौ जौं न सहाइ ।
नेहिन बिरह समुद्र तैं कौन काढ़तौ आइ ॥ ८४८ ॥
जदपि सुगाहिरी लाज तै ठहर सकै नाहिं पाइ ।
ध्यान निबारै बैठ कै भावंता इत आइ ॥ ८४९ ॥

दरसनवर्णन ।

मन हरिबे की ज्यों पढ़ै पाटी स्याम सुजान ।
तौ यहऊ पढ़ते कहूं दीबौ दरसन दान ॥ ८५० ॥
दरसन कौ चलतौ कहूं जो सुमरन सौं काज ।
दृग चकोर होते नहीं ससिमुख के मुहताज ॥ ८५१ ॥
कसर न मुझ में कुछ रही असर न अब तक तोहि ।
आइ भावते दीजिये बेग सुदरसन मोहि ॥ ८५२ ॥
कियौ मीत ने है उदौ सबही जागै आइ ।
बिरह अँधेरी रैन जहँ उदौ उदौ होइ जाइ ॥ ८५३ ॥

नेही यामैं पलत है अरे मीत अभिराम ।
दरस देत तुव गिरह के खर्च होत कछु दाम ॥८५४॥
मीता मोतैं लेत क्यों जिन मुखचंद छिपाइ ।
ऊंच नीच घर चंद तौ उवत एक सौ आइ ॥८५५॥
जिते नखत बिधि [1] दृग तिते जो रच देतौ मोहि ।
तृपित न होते वे तऊ निरख भावते तोहि ॥ ८५६ ॥
रसनिधि पल भर होतही भावन्ता पल ओट ।
नहीं सम्हारी जात है यह अनचाही चोट ॥ ८५७ ॥
हिय घरिया [2] तामें सुमन बिरह आंच सौं ताइ ।
सुबरन कीनौ मीत नै बूटी दरस मिलाइ ॥ ८५८ ॥
होती बैदन के करै बिरह बिथा जो दूर ।
काहे कौं दृग ढूंढ़ते दरस सजीवन मूर ॥ ८५९ ॥
बिन देखे तुम भावते कछु वै भावति नाहि ।
जन्म अलेखै आइ कै लेखै आवत नाहि ॥ ८६० ॥
नेहीदृग जोगी भये बरुनी जटा बनाइ ।
अरे मीत तैं दै इन्हैं दरसन भिच्छा आइ ॥८६१॥
दरसन भिच्छा के लियै फेरी दै दै जाइ ।
जोगी तैं का घट भयौ नैन बियोगी आइ ॥८६२॥

---

१ ब्रह्मा। २ जिसमें सोना गलाते हैं।

दै अनुरागी दृगन कौं दरस सजीवन मूर ।
उलफत कीजै बिरह की कुलफत किजै दूर ॥८६३॥
भीजे तन अँसुअन लखौ रबि दुति मुख अभिराम ।
रसनिधि भीजे बसन कौं छियौ चाहियत घाम ॥८६४॥
पायै बिहित अहार कौं सब कौ मन भरि जाइ ।
मन भर देखौ मीत कौ पल भर मन न अघाइ ॥८६५॥
यामैं अपनी गांठ कौ कह कछु छोरै देत ।
दरसन लव मांगत दृगन क्यों मुख मोरै लेत ॥८६६॥
जो पल तकिया (१) छोड़ दृग सकै न तुव तक आइ।
दरस भीख उनकौं कहा दीजत नहिं पहुँचाइ ॥८६७॥
नैन श्रवन बिच होत तौ झगरौ नित्त नवीन ।
मीत सुमुख दरसाइ दृग श्रवनन सांचौं कीन ॥८६८॥

सोरठा।

चाहत भांति अनेक, मोहन मुख कौ दरसबौ ।
बिधि (२) चूकौ बिधि एक, रोम रोम दृग ना रचे ॥८६९॥

दोहा।

श्रवन सुखारे होत हैं सुनै सँदेसन बैन ।
तृपित होंइ क्यों दरस बिन रूपअहारी नैन ॥८७०॥

१ जहां फकीर रहते हैं उसको मुसलमान तकिया कहते हैं।
२ बिधाता एक बिध चूका।

विरहा ग्रीषम दुपहरी प्यास दुहुन अधिकाति ।
मन बन मैं लखि लखि जियै नैन लवा इह भांति ॥८७१॥
नितहू आले (१) रहत ये तुव दृग घाले घाव ।
दरस दवा इनकौं कधी प्रीतम आन लगाव ॥८७२॥
जौं इन दृग पतियाव (२) नहि प्रीतम साहु सुजान ।
दरस रूप धन दै इन्हैं धर गहनै मों प्रान ॥८७३॥
मोहन लखि जो बढ़त सुख सो कछु कहत बनै न ।
नैनन कै रसना नहीं रसना कै नहि नैन ॥८७४॥
चाकर हुइ दृग रूप के जामिन जा मन दीन ।
दरस तलब दै भावते बड़ी नवाजस (३) कीन ॥८७५॥

मिलनवर्णन ।

गजगत (४) मैं घर प्रथमही फिरत न कतरौ जाइ ।
तव यह पहुंचत मीत लौं सोजन (५) बदन छिदाइ ॥८७६॥
कमला लै कै कमल कर लखि गुरुजन की भीर ।
धरहरि धर जिय ये भमर मिलहि तरुनजा तीर ॥८७७॥
जुदे रहन मन मिलन की सीख दृगन के अंग ।
सोवत जागत संगही जित चाहौ तित सँग ॥८७८॥

१ जो घाव सूखता नहीं उसको आले कहते हैं आले नाम गीला। २ पतियावना = विश्वास करना। ३ कृपा। ४ कपड़ापाहिले गज से नापा गया फिर सूजन से सिया गया। ५ सूई।

प्रगट मिले बिन भावते कैसे नैन अघात ।
भूखे अफरत कहुँ सुनै सुरत मिठाई खात ॥ ८७९ ॥
रही कहां चक आइ चित चल पिय सादर देख ।
लोहा कंचन होत तहँ पारस परस विसेख ॥ ८८० ॥
मान मनायौ माननी मति तैं धरै गुमान ।
जाते पाइन परन कौं उनै परै सुख जान ॥ ८८१ ॥
घरिएक (१) कौ घरियार वह आयौ है बरियाइ ।
रे घरिआरी (२) आपनी घरी राख घर जाइ (३) ॥८८२॥
एक एक के अङ्क मिल गनती ग्यारा होत ।
मिलै चार दृग की लखौ दुइ मन एकै होत ॥८८३॥
व्यापी होती जो तुमैं मिल बिछुरे की पीर ।
मिल कै पलक न बिछुरते जैसे पय अरु नीर ॥८८४॥
सिखे आपनै दृगन सैं इकताई की बात ।
जुरी डीठ इक सँग रहै जदपि जुदे दिखात ॥ ८८५ ॥
मैं जानी रसनिधि सही मिली दुहुनि की बात ।
जित दृग तित चित जात है जित चित तित दृग जात ॥
बड़ौ मीत तुव मिलन कौं चित राजी कौ चाव ।
इतराजी (४) मत कर अरे इत राजी (५) ह्वै आव ॥८८७॥

१ एक घड़ी को यार घर आया। २ घंटा बजानेवाला।
३ घर पाय राख अथात् न बजाव। ४ नाराजी।
५ यहां राजी हो आव।

जलकन तिलकन पलक मैं कहु आली केहि हेत ।
भावन्ता लखि बिरह कौ नैन तिलांजुलि देत ॥८८८॥
नाहि राती है प्रीति सौं है अरात (१) ये रात ।
प्रीतम के संजोग मैं क्यों बनही बड़ जात ॥ ८८९ ॥
लगत कमलदल (२) नैन जल झपट लपट हिय आइ ।
बिरह लपट अकुलाइ जब भाज हिये तै जाइ ॥८९०॥

मानभावदलन ।

अमरैया (३) कूकत फिरै कोइल सबै जताइ ।
अमल भयौ ऋतुराज (४) कौ रुजू होहु सब आइ ॥८९१॥
कहि कहि तुहि समुझाइये तेरौ वाह सयान ।
अर्थ मान कौ तौ समुझ तब कर उनसौं मान ॥८९२॥
मैं घन ये उनये (५) लखै नये नये चित चाइ ।
तऊ न ये मानत नये लाल न ये पगिआइ ॥ ८९३ ॥
अरी मधुर अधरान तैं कटुक वचन मत बोल ।
तनक खुटाई तें घटै लखि सुबरन को मोल ॥ ८९४ ॥
अब इतराजी मत करै मुज बिस राजी राख ।
जब रस जौं चाहौ लियौ सुरँग हियै अभिलाख ॥८९५॥

---

१ बैरिन। २ श्रीकृष्ण। ३ आम की बाग। ४ बसंत।
५ नये = १ न. पट २. नवीन ३ झुके।

इती बात कौं समझ लै तूं अपनै मन बाल (१) ।
प्रीति दुलारी खुलत है लहि कै मगजी लाल ॥८९७॥
इह औसर बरषा समै लिपटत लता तमाल ।
अरी या समै लाल सौं मान कहा जिय बाल ॥ ८९८ ॥

खण्डितावर्णन ।

देत जताये प्रगट जो जावक लागो भाल ।
नवनागरि के नेह सौं भले बनें हो लाल ॥ ८९९ ॥
मुँह की हम सौं कहत हौ जिय कौ वासौं हेत ।
सांचे बिन गुनमाल के सांचे कीनै देत ॥ ९०० ॥
कीनौ जिहि मन भावती हरुवा जिहि वरि बास ।
हरि वाहीं जैयै भलै हरिजाई के पास ॥ ९०१ ॥
जुही बसत तासौं कहूं प्रीति निचारी जाय ।
मौर सिरी दिन दिन चढ़े सदा सुहागिल ताय ॥ ९०२ ॥
भेटै मेटै दाह उर कत मेटत मुख पाट ।
चाहत हू है बाट वह चले जाव यह बाट ॥ ९०३ ॥
मेरेई उर गड़ि गये तेरेई दृग लाल ।
जानि पतियाउ लखो ईन्हें दरपन लै कै लाल ॥९०४॥
नये चलन पाहिलै हते लये कहा पटि हाल ।
नये नेह सौं फिरत हौ कछू नये से लाल ॥ ९०५ ॥

१ पीले डुपट्टा मे लाल मगजी जैसे अच्छी लगती है ।

शिक्षावर्णन।

अरी जात है ब्रजहि जो मोहन मुख मत जोइ।
फिर न छिपाये छिपहिगी इसक[१] मुसक[२] की बोइ॥
मान कही मेरो अरी भूल[३] उतै मत जाइ।
ऐहै लखि ब्रजचंद कों मन नग नैन गँवाइ॥९०७॥
कही न मानी प्रथमहू ताको है फल येह।
मैं न कही तूं जिन करै निरमोही सों नेह॥९०८॥
मैं न कही तुहि सों अरे मत पर सासि के ख्याल।
एक ओर को प्यार है रे चकोर जंजाल॥९०९॥
हित मित बिन मन धन दिये क्यों कर सकियै पाइ।
बिन गथ[४] सौदा हाट तें ल्यायो कौन बिसाइ॥९१०॥
मैं न कही तोसों अरे मैन[५] कही मत मान।
मन मानिक दै आइहै लखि मोहन मुसक्यान॥९११॥
नेह पंथ मैं भावतो धरियै पाइ[६] सम्हार।
साबित हुइ मन आपने मीत रजा अखत्यार॥९१२॥
मैं न कहा कै बार तुहि मैन कहा मत मान।
मुहि देखत बहुते छले इन नै खान खुमान॥९१३॥
प्रथम न बरजों हो तुम्हैं मति वाहै पतियाइ।
चित चोरन कर सौंप चित अब काहे पछताइ॥९१४॥

१ इश्क = लगन प्रीत। २ मुश्क = कस्तूरी। ३ उतै।
४ दाम पूंजी। ५ कामदेव। ६ पैर।

भूलेहूं मत दरद कहु बेदरदिन के पास ।
पीनसवारौ कब लहै सरस अतर की बास ॥ ६१५ ॥

लोकरीतिबर्णन ।

याही तैं यह आदरै जगत माह सब कोइ ।
बोलै जबै बुलाइये अनबोले चुप होइ ॥ ६१६ ॥
हुक्का सौं कहु कौन पै जात निबाहौ साथ ।
जाकी स्वासा रहत है लगी स्वास के साथ ॥ ६१७ ॥
मोहन तूं या बात कौं अपनै हियै बिचार ।
बजत तमूरा कहुँ सुनै गांठ गठीले तार ॥ ६१८ ॥
छबि मुकता लूटन लगे आइ जरा बट पार (१) ।
बैठ बिसूरै सहर के बासी कर कट तार ॥ ६१९ ॥
जग तरबर तैं फल लगै जौ लग कांचौ गात ।
पाके तै फल आपही डारनि तैं छुटिजात ॥ ६२० ॥
बिन औसर न सुहाइ तन चंदन ल्यावै गार ।
औसर की नीकी लगै मीता सौ सौ गार ॥ ६२१ ॥
चल आयौ जै है चलौ जगत बिदित ब्यौहार ।
गाहि लियै जो बन कन(२) हि रहित ठहर इकप्यार॥ ६२२ ॥
बार बार नाहि होत है औसर मौसर (३) वार ।
सौ सिर दीबे कौ अरे जौ फिर हूजे त्यार ॥ ६२३ ॥

१ बुढ़ापा। २ कना = अनाज। ३ मैअस्सर होना अर्थ मिलना।

बितचोरन चितचोर में ब्योरो (१) इतनो आइ ।
इन्हें पाइ कै मारिये उनके लगिये पाय ॥६२४॥
समै पाइ कै लगत है नीचहु करन गुमान ।
पाय अमरपख (२) दुजनि लों काग चहै सनमान ॥६२५॥
झूठेही जर जात है याके साखी पांच ।
देखी कै काहू सुनी लगत सांच कौ आंच ॥ ६२६ ॥

फाग वर्णन।

जिन नैनन में बसत है रसनिधि मोहन लाल ।
तिन मैं क्यों घालत अरी तैं भर मूठ गुलाल ॥६२७॥
नेह अतर छबि अरगजा भर गुलाल अनुराग ।
खेलत भरी उछाह सौं पिय सँग होरी फाग ॥६२८॥
मुख मीड़त आंजत दृगन प्रेम मुदित ब्रजबाल ।
कहत सबै नँदलाल सौं हो हो होरी लाल ॥ ६२६ ॥

अन्योक्ति वर्णन।

रे कुचीलतन तेलिया अपनो मुख तो हेर ।
सुमननिवासे तिलन कों काहे डारत पेर ॥ ६३० ॥
अरे बजावत कौन ढिग हित रबाब के तार ।
जुरो जात है आइ कै बिरहिन को दरबार ॥ ६३१ ॥

---

१ ब्योरो = फरक। २ पितृपक्ष।

जिहिं कनैल के फूल की लेत न बास सुहाइ ।
माली सुमन गुलाब के उनपै मत लै जाइ ॥ ६३२ ॥
करबी मैं जौ ऊख सम रस सरसातौ आइ ।
साजन देते याह क्यों सहसा पसुन (१) खवाइ ।६३३॥
जदपि सुकोल्हू मै उनै बिदित सुपेरौ आइ ।
बासे तिलवा सुमनि संग बास न ताकी जाइ ॥६३४॥
तन मन तोपै वारिबौ यह पतंग कौ नाम ।
येतेहुँ पै जारिबौ दीप तिहारोइ काम ॥ ६३५ ॥
चेतन होइ न एक सुर कैसे बनै बनाइ ।
जड़ मृदङ्ग बेसुर भये मुँहे थपेरे खाइ ॥ ६३६ ॥
कूकत अवध लवा लियै अरे बधिक बेकाज ।
फिर आवत काहू सुनै चाक चढ़े चित बाज ॥ ६३७ ॥
अलगरजी घन सौं नहीं सुनियौ सन्त सुजान ।
अरजी चात्रिक दीन की गरजी सुनै न कान ॥६३८॥
ओर कहा देखत नहीं तुव ससिमुख की ओर ।
चोर लियौ तैं सबन में काहे चित्त चकोर ॥६३९॥
कहा भयौ जौ सिर धर्‍यौ कान्ह तुम्हैं करि भाव ।
मोरपँखा बिन और तुम उहां न पैहौ नाव ॥ ६४० ॥

---

१ पशु की जमा ।

रवि ससि अवनि सघन पवन और अगिन की ज्वाल।
ऊंच नीच घर सम लखै दुबिधा तज कै लाल ॥९४१॥
होत दूबरौ कूबरौ ससि तैं हर पखवार ।
तोही सौं हित राखहीं दृग चकोर रिझवार ॥ ९४२ ॥
हरी करत है पुहुमि सब घन तूं रस बरसाइ ।
आक जवासे कौं अरे काहे देत जराइ ॥९४३॥
तोय मोल मैं देत हौ छीरहि सरस बढ़ाइ ।
आंच न लागन देत वह आप पहिल जर जाइ ॥९४४॥
लखि बड़वार सुजातिया अनख धरै मन नाहिं ।
बड़े नैन लखि अपुन पै नैना सही सिहाहिं ॥ ९४५ ॥
अरे निरदई मालिया फूले सुमननि तोर ।
नैक कसक कर हेरतौ प्रीत डार की ओर ॥ ४६ ॥
दुइमन तौल मिलाइ कै पुन इकठे कर हेर ।
यै गौहूं अरु बाजरै बड़े भाव मै फेर ॥ ९४७ ॥
प्यास सहत पी सकत नहि औघट घाटनि पान ।
गज की गरुवाई परी गजही के गर आन ॥ ९४८ ॥
औघट घाट पखेरुवा पीवत निरमल नीर ।
गज गरुवाई तैं फिरै प्यासे सागर तीर ॥ ९४९ ॥
अँधियारी निस बिच नदी तामै भँवर अपार ।
पार जवैया दरद कब लहै रहै या वार ॥ ९५० ॥

हरौ हरौ रँग देख कै भूलत है मन हैफ ।
नीम पतौवन मै मिलै कहूं भाग कौ कैफ ॥ ९५१ ॥
धरि सौनै के पींजरा राखौ अमृत पिवाइ ।
बिष कौ कीरा रहत है बिषही मै सुख पाइ ॥ ९५२ ॥
कोलत काठ कठोर क्यों होत कमल मै बन्द? ।
आई मो मन भँवर की इतनी बात पसन्द ॥ ९५३ ॥
धरे जदपि बहु मोल के घरन जवाहिर हूब ।
आँनद के औसर तऊ सीस बांधियत दूब ॥९५४॥
चित चाहन जिहि मुख लहौं स्वाद नागरी पान ।
ढाक पात भावत सुनौ तिनकौं कहा सजान ॥९५५॥
सबही कौ पोषत रहै अमृत कला सरसाइ ।
ससि चकोर के दरद कौं अजौ सकत नहि पाइ ॥९५६॥
चार (१) जाम दिन के जिन्हैं कलप समान बिहात।
चंद चकोरन दरस अब दैन लगौ अध रात ॥९५७॥
समय पाइ कै रूप धन मिलत सबैई आइ ।
बिलस न जानै याह जो समय गये पछताइ ॥९५८॥

१ जिन चकोरन को चार पहर (दिन के) कलप के समान कटते हैं उन्हे तो (चन्द्रमा) अब आधीरात को दरसन देने लगा अर्थात् दोपहर और जादा लगाने लगा।

बैठत (१) इक पग ध्यान धरि मीनन कौं दुख देत।
बक मुख कारे हो गये रसनिधि याहीं हेत ॥९५९॥
जब देखौ चाहिये तुहैं तब तूं नहीं दिखात।
लीलकण्ठ वीतें दसैं (२) फिर है कीरा खात ॥९६०॥
याके बल वह लेत है पावक चिनगी खाइ।
चंदहि जौ जारन लगौ तौ चकोर कित जाइ ॥९६१॥
अमित अथाहै हौ भरे जदपि समुद अभिराम।
कौन काम के जौ न तुम आये प्यासन काम॥९६२॥
सरस मधुप गुञ्जत रहै लेत सुमन की बास।
कुम्हल्यानै फिरता नहीं अली रली ता पास॥९६३॥
रती रती के बढ़तहीं मन बढ़ि जात अतौल।
घटै भाव के मन यहै लहै न कौड़ी मोल ॥९६४॥
ससि चकोर के दरद कौ जब तुहिं असर न होइ।
कुहू (३) निसा षोड़स कला तब तैं बैठत खोइ ॥९६५॥
अरे निरदई मालिया कहुँ जताय यह बात।
केहि हित सुमनन तोरि तैं छेदत सौजन गात ॥९६६॥

१ बृथा दूसरों को दुख देनेवाले का काला मुँह होता है।
२ विजयदशमी को नीलकण्ठ का दर्सन करना कहा है।
२ कुहू = अमावास्या।

गुल (१) गुलाब अरु कमल कौ रस लीन्हौं इक ताक।
अब जीवन चाहत मधुप देख अकेलौ आक ॥९६७॥
काग आपनी चतुरई तब तक लेहु चलाइ।
जब लग सिर पर दैइ नहि लगरसतूना आइ॥९६८॥
जा गुलाब के फूल कौं सदा न रँग ठहराइ।
मधुकर मत पच तूं अरे वासौं नेह लगाइ ॥ ९६९ ॥
सब रंगन में नीर तुम मिल के रँग सरसात।
मीत प्रेम रँग से कहौ क्यों न्यारे होइ जात ॥ ९७० ॥
उयै सोख जल लेत है बिना उये दुख देत।
कठिन दुहूं बिधि कमल कौ करै मीत (२) सौं हेत ॥९७१॥
जानत सही चकोर कर ससि सौ प्रेम सलूक।
अमृत सराबी के रसहि समुझहि कहा उलूक ॥९७२॥
मोलै मोला कहत हैं फलै अम्बिया नाव (३)।
और तरुन मे नूत (४) यह तेरौ धन्य सुभाव ॥९७३॥
ससि निरमोही हौ भले भोर भये घरजाव।
दिनकर बिरह चकोर कौं मैट न सकिहौ दाव॥९७४॥

---

१ फूल। २ सूरज। ३ जब आम बौराता है तब उसको मोरा बोलते हैं जब छोटा फल लगता है तब अमवा कहते हैं।
५ नूतन = नवीन।